राधास्वामी सहाय

प्रेमपत्र राधास्वामी

भाग ६

E Edition Ver 1.0

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

राधास्वामी गाय कर जनम सुफल कर ले
यही नाम निज नाम है मन अपने धर ले

प्रेम पत्र राधास्वामी

छठा भाग

जिसको

परम सन्त सतगुरु हुज़ूर महाराज ने
ज़बान मुबारक से फ़रमाया

छटी बार) सन् 2018 (1000 प्रतियाँ

प्रकाशक
राधास्वामी ट्रस्ट,
स्वामीबाग़, आगरा 282005

All rights reserved

कोई साहब बिना इजाज़त इस पोथी को नहीं छाप सकते

तीसरी बार	**सन् 1963**	**1000 प्रतियाँ**
चौथी बार	**सन् 1980**	**1000 प्रतियाँ**
पाँचवीं बार	**सन् 1989**	**5000 प्रतियाँ**

बारहवीं बार) **सन् 2018** **(1000 प्रतियाँ**

(द्वि-शताब्दी संस्करण)

40 रुपये

संगणक लेखक :
कोमल डेस्क टॉप प्रिंटिंग,
रामकृष्ण नगर, तुमसर 441912

मुद्रक :
इमेजिनेशन डिज़ाइंस, 509/B एटलान्टिस हाईट्स
साराभाई मेन रोड, वडीवाडी, वडोदरा 390017
फोन 0265-2337808 मो 9898707808

प्रेम पत्र छठा भाग जो कि पहली मई सन् १८९८ ईसवी से १५ दिसम्बर सन् १८९८ ईसवी तक समाप्त हुआ उसके बचनों का

सूचीपत्र

बचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ
१	पिछले वक़्तों में जीवों का उद्धार बा-वजूद तप और जप वग़ैरा के नहीं हुआ	-- -- १
२	काल करम से डरो और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की ओट गहो और उनके चरनों की तरफ़ भागो	-- -- ६
३	जब तक संसारी स्वभाव और मन के विकारी अंग घटाये न जावेंगे, तब तक चढ़ाई और ऊँचे देश में ठहरना मुमकिन नहीं है।	-- -- १५
४	राधास्वामी मत के सतसंगी को अपने उद्धार की निसबत किसी तरह का शक़ और संदेह नहीं करना चाहिये	-- -- २१
५	जो राधास्वामी दयाल की सरन में आया है, उसको मौज के साथ मुवाफ़िक़त करना मुनासिब और लाज़िम है	-- -- ३०
६	मालिक के चरनों में प्रीति और प्रतीत करना और बढ़ाना और दुनिया और उसके सामान और दुनियादारों से भाव और प्यार कम करना और घटाते जाना	-- -- ३६
७	भक्ति मार्ग और अन्तर अभ्यास की कमाई की हालत में, कुल मालिक राधास्वामी दयाल को एक देशी और भी सर्व देशी मानना चाहिये	-- -- ४२
८	प्रथम ज़रूरत स्वरूपवान सतगुरु और उनकी प्रीति और प्रतीत की है, तब अरूपी सतगुरु यानी कुल मालिक से मेला होगा	-- -- ४८

बचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ
९	बाचक ज्ञानियों का अपने तईं ब्रह्म कहना या मानना ग़लत है	-- -- ५९
१०	सरन और करनी के वास्ते प्रेम और मेहर दरकार है।।	-- -- ६२
११	मालिक घट २ में मौजूद है	-- -- ६६
१२	मालिक को भक्ति प्यारी है और भक्ति सतगुरु की, और किसी की भक्ति मंज़ूर नहीं है	-- -- ७१
१३	सतसंगियों को सेवा के मुआमले में आपस में क्रोध करना नहीं चाहिए	-- -- ७७
१४	परमार्थ की चाह मुवाफ़िक़ दुनिया की चाह के, ज़बर होना चाहिये	-- -- ८३
१५	सच्चा परमार्थी गुरु के बचन के मुवाफ़िक़ बर्ताव करेगा	-- ८८
१६	जो कोई सचौटी के साथ सतसंग करेगा, उसकी हालत ज़रूर बदलेगी	-- -- ९४
१७	यह मन मस्त और ग़ाफ़िल है और दुनिया के भोग बिलास में बँधा हुआ है	-- -- ९७
१८	सतगुरु को दीनता पसंद है, सो जो कोई सच्चा दीन होकर उनकी सरन लेवे, उसी को पार पहुँचाते हैं।।	-- -- १०१
१९	गुरु-स्वरूप मालिक की महिमा, हरि-स्वरूप से ज़्यादा है	-- -- १०३
२०	जब तक कि जड़ चैतन्य की गाँठ न खुलेगी, तब तक मन विकारी अंगों में थोड़ा बहुत बर्तता रहेगा	-- -- ११०
२१	शब्द तुलसी साहब के	-- -- ११४
२२	संवाद तुलसी साहब का साथ फूलदास साधू कबीर पंथी वग़ैरा के	-- -- २४७

राधास्वामी मौज से प्रेमपत्र जारी।।
दृढ़ विश्वास होय चरन में और प्रीत गाढ़ी।।
सुमिरन ध्यान और भजन में नित नया आनंद पाय।।
सतसंगी सब उमँग २ राधास्वामी महिमा गाय।।

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

प्रेम पत्र राधास्वामी

छठा भाग

बचन पहिला

पिछले वक़्तों में जीवों का उद्धार बा-वजूद तप और जप वग़ैरा के नहीं हुआ। अब राधास्वामी दयाल अति दया करके, थोड़ी प्रीति उनके चरनों में लाने से, सहज में उद्धार फ़रमाते हैं। बड़भागी जीव उनसे या संत सतगुरु या उनके प्रेमी जन से, किसी न किसी क़िस्म का नाता प्रीति का जोड़ते हैं और अभागी जीव उनके भक्त जन से विरोध या उनकी निंदा करते हैं।

१ - पिछले वक़्तों में लोग बहुत मेहनत और काष्टा बाहरमुखी परमार्थी कामों में अपने तन मन पर धारन करते थे, लेकिन फिर भी सच्चा उद्धार किसी का नहीं हुआ, यानी माया के घेर के पार कोई नहीं गया।।

२ - कोई जप यानी नाम के ज़बानी और स्वाँसा के सुमिरन में अटके रहे और कोई तप यानी अनेक तरह की काष्टा देह पर सहते रहे, जैसे पंच अग्नि तपना, जल सैन करना, खड़े रहना या किसी ख़ास आसन से बैठे रहना या उल्टे टँगना या मौन धारन करना और कोई धोती नेती और बस्ती क्रिया यानी स्थूल शरीर के अंदर की सफ़ाई रखने में पचते रहे, पर यह सफ़ाई ज्यों की त्यों मुमकिन न थी यानी चौबीस घंटे में फिर ब-दस्तूर मल मूत्र इन्द्रिय द्वारों में भर जाता है।।

३ - सिवाय इसके बाज़े लोग बहुत सख़्ती के साथ व्रत धारन करते रहे यानी एक दो तीन दिन से लेकर इक्कीस दिन तक और बाज़े इससे ज़्यादा बे खाने पीने के गुज़ारते रहे और हरचंद भारी तकलीफ़ पाते रहे बल्कि कहीं २ मौत भी होगई, पर फिर भी इन कामों से बाज़ न आये और आइन्दा के जनम में सुख स्थान के प्राप्ति की आसा पर यह कार्रवाई करते रहे।।

४ - ख़ुलासा यह है कि जो कुछ ऊपर लिखा गया, उससे भी ज़्यादा तकलीफ़ के काम जैसे डंडौती परिक्रमा और हमेशा नंगे बदन रहना और धूप और मेंह और सरदी की बर्दाश्त करना वग़ैरा २ लोगों ने इख़्तियार किये, पर सच्चे मालिक का भेद और पता उनको न मिला और न उनके धाम में पहुँचने की जुगत उनको मालूम पड़ी।।

५ - अष्टांग योग की जो कि एक मुशकिल अभ्यास प्राणों के साधन का है, बहुत महिमा पिछले जोगीश्वरों और औतारों ने करी, बल्कि उसी को एक ख़ास साधन ब्रह्म पद की प्राप्ति के वास्ते क़रार दिया। मगर

यह साधन ऐसा कठिन था कि सिवाय बिरले ईश्वर-कोटि मनुष्यों के और किसी से दुरुस्त और पूरा न बना और इस वास्ते सब के सब नीचे के देश में रहे और बह्म पद तक न पहुँच सके।।

६ - ऐसी हालत जीवों की देख कर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने अति दया करके संत सतगुरु रूप धारन किया और सहज जुगत जीव के उद्धार की सुरत शब्द मार्ग की कमाई से प्रकट करी।।

७ - हरचंद सुरत और मन का घट में चढ़ाना शब्द के वसीले से कुछ आसान काम नहीं है यानी इसके वास्ते भी वैराग्य संसार और उसके भोगों से और गहरा अनुराग चरनों में संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के, दरकार है, लेकिन निहायत दया करके और जीवों को बलहीन और लाचार देख कर ऐसी मौज फ़रमाई है कि जो कोई इस अभ्यास को, जिस क़दर उससे बन सके, बराबर करे जावेगा तो राधास्वामी दयाल अपनी ख़ास मेहर और दया के साथ, उसको चौरासी से बचा कर ऊँचे और सुख स्थान में बासा देंगे और दो या तीन बार जब २ संत सतगुरु इस लोक में प्रगट होवें, उसको नर देही देकर और सतसंग में शामिल करके और कमाई करा के, निज घर में पहुँचाते हैं।।

८ - ऐसी भारी दया जीवों पर आज तक कभी नहीं हुई और न किसी दूसरे की ऐसी ताक़त है कि इस क़िस्म की दया कर सके। यह काम कुल्ल मालिक और सर्व समर्थ राधास्वामी दयाल का है कि अपनी मौज से जैसे चाहें आसान से आसान तरक़ीब के साथ जीवों का

उद्धार फ़रमावें। किसकी ताक़त है कि इस दया का शुकराना अदा कर सके या उनकी दया और बख़्शिश के मुवाफ़िक़ करनी कर सके?

९ - अलावा इसके कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने और एक निहायत आसान तरकीब जीवों के उद्धार के वास्ते जारी फ़रमाई कि जिससे हर एक क़िस्म का जीव, चाहे उससे सतसंग और अभ्यास भी कम बनता होवे या जैसा चाहिये दुरुस्त न बन सके, तो भी वह थोड़ी बहुत दया और उसके मुवाफ़िक़ उद्धार का अधिकारी हो सकता है यानी उसके उद्धार का सिलसिला जारी हो कर एक दिन वह धुर मुक़ाम में पहुँचने के लायक़ बन सकता है।।

१० - वह आसान तरकीब यह है कि जीव कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के सतसंग की महिमा सुन कर, उनके चरनों में थोड़ी बहुत प्रीति लावें और मुहब्बत का नाता उनसे और उनके सतसंग में जोड़ें। जिस क़दर प्रीति जिसको चरनों में और सतसंग में आवेगी, उसी क़दर उसके अंतर में सफ़ाई होती जावेगी और नाम यानी हिरदे में चरन बसते जावेंगे यानी याद बढ़ती जावेगी।।

११ - यह प्रीति आहिस्ते २ दुनिया की अन्य प्रीतों को घटावेगी और बढ़ती २ इस क़दर तरक़्क़ी पकड़ेगी कि चरनों का गहरा प्रेम जीव के हिरदे में पैदा हो जावेगा और सब तरफ़ से आहिस्ते २ हटा कर एक दिन निज धाम में पहुँचावेगा।।

१२ - जिसके हिरदे में थोड़ी से थोड़ी भी प्रीति राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की पैदा हुई है,

वह भी चौरासी से बचा लिया जावेगा और सुख स्थान में बासा पावेगा और तीन चार जनम संत सतगुरु की मौज और दया से धारन करके वह भी एक दिन निज धाम में पहुँचा दिया जावेगा।।

१३ - अब ख़्याल करो कि लोग दुनिया में अनेक जगह और अनेक जीवों से किसी न किसी दरजे की प्रीति कर रहे हैं, तो उनको थोड़ी बहुत प्रीति राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में लाना कुछ मुशकिल बात नहीं है, क्योंकि प्रीति करना और उसके मुवाफ़िक़ व्यवहार बर्तना वे अच्छी तरह से जानते हैं।।

१४ - अब ग़ौर का मुक़ाम है कि राधास्वामी दयाल ने किस क़दर आसान तरीक़ा, अलावा सतसंग और अभ्यास के, वास्ते उद्धार आम जीवों के, जारी फ़रमाया है। जो ज़रा भी दीनता के साथ प्रीति करे, वही उद्धार का अधिकारी हो सकता है।।

१५ - सिवाय इसके और ज़्यादातर दया कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने इस तरह पर फ़रमाई है कि जो कोई उनसे या संत सतगुरु से प्रीति न कर सके, लेकिन उनके सच्चे सतसंगी यानी प्रेमी सेवक से किसी तरह पर प्रीति करे यानी रिश्तेदार होकर अपने रिश्ते के मुवाफ़िक़ मुहब्बत करे या उसकी भक्ति देख कर परमार्थी प्रीति करे, तो उसकी प्रीति का फल उसको थोड़ा बहुत वैसा ही मिलेगा, जैसा कि राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीति करने से हासिल होता। अब इस दया का विचार करो कि कहीं वार पार नहीं है कि बग़ैर करनी के भी जीवों को मेहरी जीवों के

ग़ोल में शामिल करके, आइन्दा को विशेष मेहर और दया यानी पूरे उद्धार के लायक़ बनाते हैं। ऐसी मेहर जीवों पर कभी नहीं हुई और न कोई दूसरा, सिवाय कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के, कर सकता है।।

१६ - जो कोई इस क़दर आसानी और निहायत दरजे की दया की, जो जीवों पर इस ज़माने में फ़रमाई गई है, क़दर न करे और बाख़्शिश न लेवे तो जानना चाहिये कि वह जीव अभागी है। और जो जीव कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल या उनके सतसंगियों से बजाय भाव और प्रीति करने के विरोध रक्खे या उनकी निंदा करे तो उनको जानना चाहिये कि वह महा अभागी है और इस जनम में और आइन्दा महा कष्ट और कलेश भोगेगा। मगर फिर भी दया उसको थोड़ा बहुत डंड पाने के बाद सच्चे रास्ते पर लाकर उद्धार का अधिकारी बनावेगी।

बचन दूसरा

काल करम से डरो और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की ओट गहो और उनके चरनों की तरफ़ भागो।।

१ - काल और कर्म बड़े ज़बरदस्त हैं, और इस रचना में भारी ज़ोर इनका है।

२ - जीवों को अनेक रीति से दुख पहुँचाते हैं और सख़्त मुसीबत में उनको गिरफ़्तार करते हैं, जहाँ किसी

का बल और चतुराई किसी तरह की मदद नहीं कर सकती।।

३ - जिस २ रीति से यह काल और कर्म जीवों को सताते हैं, उसकी थोड़ी सी शरह लिखी जाती है।।

आफ़ात आसमानी

(१) बे वक़्त या बहुत ज़्यादा बारिश (२) बे वक़्त या ज़्यादा ओले का बरसना (३) बे वक़्त या ज़्यादा बर्फ़ का बरसना (४) भूचाल (५) तूफ़ान हवा या पानी का (६) मरी या सख़्त वबा (७) बिजली का गिरना (८) बारिश बिल्कुल न होना या अकाल का पड़ना।।

आफ़ात दुनियावी

(१) रोग यानी देह की अनेक क़िस्म की बीमारी (२) सोग यानी प्यारों की मौत का रंज (३) नुक़सान धन और माल व असबाब (४) लड़ाई राजाओं की (५) नुक़सान माल व जान, लड़ जाने रेल से (६) नुक़सान माल व जान, डूब जाने व टूट जाने जहाज़ों से (७) नुक़सान माल व जान, गिर जाने मकानात (८) नुक़सान माल व जान, लग जाने आग से (९) क़ज़िये व झगड़े, ब-सबब ना-इत्तिफ़ाक़ी या क्रोध विरोध और लोभ के (१०) मुफ़लिसी व नादारी सोहबत और बुरे कामों की तरफ़ (११) ख़राबी मन की और झुकाव उसका नाकिस सोहबत और बुरे कामों की तरफ़ (१२) नुक़सान जान व माल, ब-सबब चोरी व डाकेज़नी।।

४ - यह सब तकलीफें और मुसीबतें जीवों पर समय २ पर, कभी ख़ास और कभी आम तौर से

गुज़रती रहती हैं और वे लाचार होकर इनको सहते हैं और हरचंद रोते और पुकारते हैं, पर कोई, सिवाय बाज़ी २ हालतों के, उनकी मदद किसी तरह नहीं कर सकता।

५ - सब लोग ऐसा कहते हैं और समझते हैं कि यह सब तकलीफ़ें जीवों के पिछले अगले कर्मों का फल हैं, पर उन कर्मों को कोई नहीं काट सकता और न कोई उनके कटने का जतन या इलाज बतलाता है, इस सबब से जीव निहायत दुखी और निःआसरे रहते हैं।।

६ - संत सतगुरु दया करके जुगत और जतन बतलाते हैं। जो जीव उनके बचन की प्रतीत करके और उनके उपदेश को ग्रहण करके दिलोजान से उसका थोड़ा बहुत अभ्यास करें और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीति और प्रतीत लावें तो आहिस्ते आहिस्ते उनके अगले पिछले कर्म कट सकते हैं और जिन आफ़तों का ऊपर ज़िक्र हुआ, उनसे किसी क़दर बचाव मुमकिन है।।

७ - बचाव की दो सूरतें हैं, और यह हर एक शख़्स की प्रीति और प्रतीत यानी भक्ति और अभ्यास पर मुनहसिर हैं यानी जिस दरजे की भक्ति जिस शख़्स की होगी, उसी क़दर बचाव उसका दोनों सूरतों में हो सकता है।।

८ - पहिली सूरत यह है कि सख़्त और भारी मुसीबतें उस पर बिल्कुल न आवें या बहुत कम आवें, और उसमें भी दया की मदद शामिल रहे।।

९ - दूसरी सूरत यह है कि चाहे किसी क़िस्म की तकलीफ़ या मुसीबत आवे और ज़ाहिरा उस पर गुज़रती मालूम भी होवे, लेकिन उसके अंतर में उसका असर बहुत कम होवे या बिल्कुल न होवे यानी अंतर में प्रेम और दया और मेहर की धारा उसको शान्ति और ताक़त बर्दाश्त की देती रहे।।

१० - सिवाय सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल के जो इस लोक में संत सतगुरु रूप धारन करके प्रगट हुये, और भी उनकी जुगत के, और कोई इलाज काटने कर्मों और दूर करने या घटाने मुसीबतों का क़तई नहीं है और न किसी दूसरे मत में उस जुगत का ज़िक्र या इशारा है।।

११ - जो कुछ जतन या तदबीरें वास्ते दूर करने या घटाने बाज़ तकलीफ़ों के जीव अमल में लाते हैं, वह मामूली और दुनियावी हैं और किसी २ मुआमले में और किसी २ वक़्त थोड़ा बहुत फ़ायदा भी देती हैं, लेकिन बहुत सी जगह वह तदबीरें कुछ काम नहीं आती हैं।।

१२ - राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ बहुत से कर्म सतसंग और अभ्यास करके काटे और ढीले किये जा सकते हैं, बाज़े मेहर और दया से कमज़ोर हो जाते हैं यानी उनका असर कम व्यापता है।।

१३ - यह कैफ़ियत दया और मेहर की सतसंगी जीव की मौत के वक़्त बहुत साफ़ नज़र आती है यानी कर्मों का असर कम व्यापता दिखलाई देता है और मेहर और दया का भारी असर प्रकट नज़र आता है कि जिससे जीव देह छोड़ने के वक़्त निहायत मगन और

मसरूर हो जाता है और उस ख़ुशी का निशान उसके चेहरे पर साफ़ दिखलाई देता है।।

१४ - जो कोई इस बात की प्रतीत न करे तो उसको समझना चाहिए कि जिस क़दर दुख सुख देह और दुनिया का है, वह जीव को ब-सबब उसके बन्धन के व्यापता है। और बंधन देह और दुनिया के साथ जाग्रत अवस्था में सुरत के आँख के मुक़ाम पर नशिस्त[1] होने से पैदा होता है। जिस किसी को जुगत और तरकीब सुरत को आँख के मुक़ाम से सरकाने की मालूम है, वह, जिस क़दर, उसका अभ्यास है, उसी क़दर, सुरत को हटा कर और चरनों में लगा कर, देह और दुनिया के दुख सुख से अपना बचाव कर सकता है।।

१५ - यह बात साफ़ ज़ाहिर है कि स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था में किसी को देह और दुनिया का दुख सुख नहीं व्यापता। यह ख़राबी सिर्फ़ जाग्रत अवस्था में है। सो उसके दूर करने का जतन संतों ने यही फ़रमाया है कि जैसे बने मन और सुरत को शब्द और स्वरूप में लगा कर जाग्रत के मुक़ाम से हटाओ। और यह जुगत सुरत को हटाने और सरकाने की निज घर की तरफ़, और किसी मत में, सिवाय राधास्वामी संगत के, जारी नहीं है। फिर ज़ाहिर है कि जो कोई राधास्वामी मत में शामिल होकर और सच्चे मन से प्रीति और प्रतीत के साथ, सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास शुरू करेगा, वही एक दिन हर क़िस्म की तकलीफ़ और मुसीबत, बल्कि मौत की सख़्ती से, बच कर अपने निज घर में जो कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल

१ - निशाना।

का धाम और अमर और परम आनन्द का स्थान है, पहुँच कर हमेशा को महा सुखी हो जावेगा।।

१६ - और मालूम होवे कि राधास्वामी दयाल अपने बच्चों की, जो सच्चे होकर उनकी सरन में आये हैं और जिस क़दर बनता है, सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास भी कर रहे हैं, अनेक तरह से ख़लासी और छुटकारा, काल और माया के जाल से फ़रमाते हैं। यानी अंतर और बाहर सतसंग कराके उनके अगले पिछले कर्मों का काटना शुरू करते हैं, ताकि जल्दी सफ़ाई होकर सुरत अपने घर की तरफ़ जाने के क़ाबिल हो जावे। और यह कर्म, कटने के वक़्त, कोई कोई अंतर में अभ्यास वग़ैरा के वक़्त, या और कोई कोई बाहर भक्ति अंग में बरताव के वक़्त, या व्यवहारी और रोज़गारी कारोबार के इजराय में अपना फल देते हैं, लेकिन राधास्वामी दयाल की दया हमेशा संग रहती है और जिस क़दर और जिस तरह रक्षा और सम्हाल के साथ कर्मों का भुगतवाना मंज़ूर है, उसी मुवाफ़िक़ कार्रवाई अंतर बाहर मौज से जारी होती है।।

१७ - जिस किसी के जैसे कर्म हैं, उस मुवाफ़िक़ दुख सुख भी ज़रूर थोड़ा बहुत व्यापता है और मन में खौफ़ और घबराहट भी पैदा होती है, लेकिन नतीजा उसका मसलहत से ख़ाली नहीं होता यानी उन कर्मों के भोग में जो चिन्ता और फ़िक्र और खौफ़ या तकलीफ़ थोड़ी बहुत मन और तन पर गुज़रती है, वह किसी क़दर सफ़ाई और सिमटाव या चढ़ाई मन और सुरत की या टूटने या ढीले होने कोई कोई बंधन का और संसार और उसके पदार्थों से उदासीनता पैदा होने का फ़ायदा देती है।।

१८ - इस तरह पर बहुत से कर्म जो आगे जनम देकर अपना भोग देते, वे संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की मेहर से, एक ही जनम बल्कि कुछ थोड़े ही अर्से में अपना सूक्ष्म फल देकर साफ़ हो जाते हैं। यह बात बग़ैर ख़ास दया और मेहर के हासिल नहीं हो सकती यानी मेहरी जीवों में भी जो ख़ास हैं उनके वास्ते ऐसी जल्दी की जाती है और बाक़ी का हिसाब आहिस्ते २ जिस क़दर उनकी ताक़त बरदाश्त की देखी जाय और जैसी उनकी हालत और संगत और रहनी वग़ैरा होवे, उसके मुवाफ़िक़ तै किया जाता है।।

१९ - सब जीवों को जो राधास्वामी दयाल की सरन में आये हैं, इस बात का यक़ीन करना चाहिये कि वे अति दया करके सब के अगले पिछले कर्म आहिस्ते २ या जल्द जैसा मुनासिब होगा, काट कर एक दिन निर्मल करके निज घर में पहुँचावेंगे।।

२० - और मालूम होवे कि जिस वक़्त राधास्वामी दयाल किसी जीव के कर्म काटते हैं या उसकी सफ़ाई करते हैं, तो जीव को ऐसा नहीं मालूम होता कि उस की सफ़ाई हो रही है, बल्कि दोनों मुआमलों में चाहे दुनिया का होवे या परमार्थ का, उस को ऐसा नज़र आता है कि कुछ ख़राबी हो रही है या होने वाली है। बल्कि मामूली तौर व क़ायदे के मुवाफ़िक़ से भी कार्रवाई कुछ नाक़िस व अबतर मालूम होती है, इस वजह से घबराहट और परेशानी ज़्यादा होती है और दया और मेहर और रक्षा का हाथ बिल्कुल नज़र नहीं आता या ऐसा मालूम होता है कि समर्थ धनी राधास्वामी दयाल, इस वक़्त में मुतलक़ तवज्जह नहीं

फ़रमाते हैं। कहीं थोड़े अर्से बाद जबकि वह कार्रवाई ख़तम हो जाती है या क़रीब ख़तम के होती है, अकसर जीव को साफ़ मालूम होता है कि शुरू से अख़ीर तक जो कुछ कि हुआ और जैसा कुछ कि नतीजा निकला, ऐन दया और मेहर से हुआ और उसी में उसका फ़ायदा था।

२१ - कभी २ ऐसा भी होता है कि जीव को राधास्वामी दयाल की दया की कार्रवाई की ख़बर भी नहीं होती और वह अपने मन में ऐसा समझता है कि उस पर हर तरफ़ से सख़्ती हो रही है और उसकी बेहतरी के वास्ते राधास्वामी दयाल कुछ तवज्जह नहीं फ़रमाते। बल्कि परमार्थी कार्रवाई में भी कि जिसके वास्ते वह शौक़ के साथ तड़प रहा है, कुछ मदद या तरक़्क़ी नहीं देते लेकिन असल में और ही हाल है यानी हर तरह से परमार्थी कार्रवाई बढ़ा रहे हैं और अनेक रीति से सफ़ाई कर रहे हैं और जीव को उसका भेद और हाल जताना मुनासिब नहीं समझते हैं। हर मुआमले में उनकी मसलहत वेही ख़ूब जानते हैं, जीव की ताक़त नहीं कि उसको फ़ौरन समझ सके, अलबत्ता कुछ अर्से गुज़रने के बाद कुछ २ या थोड़ी समझ समझाये से आ सकती है।।

२२ - हर हालत में सच्चे सतसंगी और सतसंगिन पर फ़र्ज़ है कि जब कुल मालिक राधास्वामी दयाल को सर्व समर्थ और अंतरजामी और अपना मुरब्बी और सतगुरु और मालिक क़रार दिया है, तो चाहे सख़्ती होवे चाहे नरमी या तकलीफ़ होवे या आराम, इस मुआमले मे कर्ता धरता उन्हीं को समझे और माने।

और जब उस हालत की पूरी २ बरदाश्त न होवे, तो उन्हीं के चरनों में दया और बरदाश्त की ताक़त की प्राप्ति के वास्ते प्रार्थना करे और फ़ौरन जवाब न माँगे, कुछ देर इन्तज़ार करे, तब उस को दया की ख़बर थोड़ी बहुत ज़रूर पड़ेगी।।

२३ - जो किसी वक़्त में ख़ातिरख़्वाह यानी जीव की माँग के मुवाफ़िक दया होती मालूम न पड़े और कोई दिन सख़्ती और तकलीफ़ जारी रहे, तो भी समझना चाहिये कि बिलफ़ेल ऐसी ही मौज राधास्वामी दयाल की है और उसके साथ जैसे बने वैसे मुवाफ़क़त करे, मगर ऐसी सूरत में राधास्वामी दयाल थोड़ी बहुत ताक़त बरदाश्त की ज़रूर बख़शेंगे और सख़्ती और तकलीफ़ में कुछ कमी भी ज़रूर होगी।।

२४ - सख़्ती और तकलीफ़ में बचाव की सूरत सिवाय राधास्वामी दयाल के चरनों के और नहीं है, सो जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अंतर और बाहर उनके चरनों की तरफ़ भागें और ओट लेवें तो थोड़ा बहुत सहारा ज़रूर मिलेगा।।

२५ - इस मुक़ाम पर एक बात का याद दिलाना सब सतसंगी और सतसंगिनों को मुनासिब मालूम होता है और वह यह है कि जब वे मुवाफ़िक़ क़ायदे भक्ति के तन मन और धन जिस क़दर जिससे बन सका, कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में अर्पन कर चुके, फिर इनके ज़ाहरी या असली घाटे और बाढ़े में, किसी क़िस्म की शिकायत दुरुस्त और सही नहीं हो सकती है। लेकिन जो कि इस ज़माने में जीव निहायत निबल और नादारी और दुनिया के बखेड़ों के सबब से सख़्त

लाचार हैं, इस वास्ते जो कुछ वे शिकायत करें या माँग माँगें, वह रवा रक्खी गई है। पर इस क़दर अहतियात चाहिये कि जो किसी मुआमले में उनकी मरजी के मुवाफ़िक़ कार्रवाई न होवे, तो अपने मालिक राधास्वामी दयाल से बे-मुख और बे-ऐतक़ाद न हो जावें। और जब कि दुनिया के लोग सख़्ती और तकलीफ़ की जैसे बने, रो पीट कर बरदाश्त और सबर करते हैं, तो सब सतसंगियों पर भी फ़र्ज़ है कि अपने मालिक की मौज समझ कर, जिस क़दर बने, उसकी दया का बल लेकर, उसके साथ मुवाफ़क़त यानी उसकी बरदाश्त करें। और वास्ते आइन्दा के, ख़ास दया और मेहर के उम्मेदवार रहें, क्योंकि सख़्ती के बाद ज़रूर कुछ नरमी होती है, जैसा कि इस कड़ी में कहा है।।

।। दोहा।।

दया भली न असाध की, भली संत की त्रास।
जो सूरज गरमी करे, तो घन बरसन की आस।

और राधास्वामी दयाल ने फ़रमाया है कि संतों के क्रोध में भी दात है और मूर्खों की दया में भी घात है।

बचन तीसरा

जब तक संसारी स्वभाव और मन के विकारी अंग घटाये न जावेंगे, तब तक चढ़ाई और ऊँचे देश में ठहरना मुमकिन नहीं है। इस वास्ते परमार्थी को चाहिये कि सूरमाओं

की तरह दया का बल लेकर, मन और उसके दूतों और इन्द्रियों से जूझ कर, मलीन तरंगों को रोके और दूर करे, तब रन जीत कर अपने निज स्थान में पहुँचेगा और सुरत वहाँ से न्यारी होकर सत्तपुरुष राधास्वामी देश की तरफ़ चलेगी।।

१ - जो कि जीव वक़्त पैदायश से और जब तक कि उनको सतसंग में शामिल होने का मौक़ा मिले, संसारियों के संग में परवरिश पाते हैं और उन्हीं के साथ रोज़ाना बर्ताव और व्यवहार बर्तते हैं, इस सबब से उनमें संसारी आदतें और ख़्वाहिशें भरी रहती हैं और उन्हीं के मुवाफ़िक़ उनका चाल चलन और ख़यालात और सोच और विचार होता है।

२ - यह संसारी स्वभाव और व्यवहार ख़ुद-मतलबी से भरा हुआ रहता है यानी हर एक शख़्स सिवाय अपने मतलब के दूसरे का कुछ ख़्याल नहीं करता और जैसे बने वैसे अपना मतलब बनाता है, चाहे उसमें दूसरे का नुक़सान हो या फ़ायदा।।

३ - जितने कर्म कि संसारी लोग करते हैं, उनमें से बाज़े ज़रूरी और बहुत से फ़िज़ूल हिर्स करके करते हैं और निहायत अहंकार अपना, उनके करने में, ज़ाहिर करते हैं और बहुत जल्द मतलब के पूरे होने या न होने पर दुखी सुखी हो जाते हैं।

४ - यह लोग अपने मन के हाल और चाल से बेख़बर रहते हैं। और दूसरे की कसर जताने को या

उस पर तान मारने को तैयार रहते हैं और ज़रा सी बात पर बे समझे बूझे जल्द ग़ुस्से में भर आते हैं और शिकवा और शिकायत करने लगते हैं।

५ - किसी की निंदा और किसी की स्तुति करना संसारियों का स्वभाव है और यह कार्रवाई अकसर बे-तहक़ीक़ात और बिना विचारे हुए करते हैं और किसी के हर्ज और नुक़सान का, जो उनकी निंदा और स्तुति से पैदा होवे, ज़रा भी ख़याल नहीं करते।

६ - एक भारी ऐब संसारी मर्द और औरतों में यह है कि चाहे कोई उनके सामने किसी की कैसी ही बुराई या बदनामी करे, तो उस पर फ़ौरन यक़ीन ले आवें और उस अपने यक़ीन के मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत कार्रवाई शुरू कर देते हैं और बग़ैर तहक़ीक़ात के उस बुराई की बात को, हर एक के सामने ज़ाहिर करने में कुछ दरेग़ नहीं करते। जो कोई उस बात को ना-दुरुस्त या झूठा बतलावे, तो उसके कहने को जल्दी सही नहीं मानते।

७ - एक दूसरे की ईर्षा करना और उसकी बड़ाई और तरक़्क़ी को देख कर हसद करना यह भी संसारियों का ख़ास स्वभाव है, चाहे कोई, अपना खास अज़ीज़ या रिश्तेदार होवे, बल्कि जहाँ मुहब्बत और रिश्ता है, वहाँ ईर्षा और भीतरी अन-देखनापन ज़्यादा होता है और उसकी चाल ढाल पर चाहे वह दुरुस्त ही होवे, ज़रूर तान और तंज़ करके कुछ न कुछ ऐब और बुराई निकालें। ख़ुलासा यह है कि अपने से बढ़कर किसी को ख़ुशी के साथ देख नहीं सकते।

८ - संसारी जीवों में यह भी स्वभाव ज़बर रहता है कि ज़रा सी तकलीफ़ और सख़्ती में घबरा कर

शिकायत, मालिक की और जीवों की, करने लगते हैं। क्षमा और बरदाश्त बहुत कम रखते हैं और जो तदबीर उस तकलीफ़ के दूर होने के वास्ते कोई शख़्स बतलावे, उसको फ़ौरन करने को तैयार होते हैं, चाहे वह दीन और दुनिया के क़ायदे के मुवाफ़िक़ दुरुस्त होवे या नहीं।

९ - संसारियों का पूरा विश्वास और ऐतक़ाद किसी में नहीं होता। जब तक काम निकले जाय, तब तक यक़ीन दुरुस्त रहता है और जब किसी काम में ख़लल पड़े, तब ही एतक़ाद जाता रहता है, मगर कहीं कहीं ख़ौफ़ के सबब से निभाते रहते हैं।।

१० - अपने बचाव और अपने मतलब के हासिल करने के वास्ते झूँठ बोलने में दरेग़ नहीं करते और जिस किसी से अदावत या बर-ख़िलाफ़ी हो जावे, तो उस पर झूँठा इलज़ाम या तान लगाना या किसी तरह से उसकी बदनामी कराने में ख़ौफ़ नहीं करते, मगर यह बात आम नहीं है। आला दरजे के यानी उत्तम लोग ऐसी कार्रवाई नहीं करते और औसत दरजे वाले भी अक्सर ख़ौफ़ करते हैं।।

११ - जिस सतसंग में मालिक और उसके प्रेम की महिमा या भेद का वर्णन होवे, संसारियों का मन कम लगता है, लेकिन जहाँ क़िस्से और कहानी और लड़ाई और झगड़ों की कथा होवे, उसको बहुत ख़ुशी से सुनते हैं।।

१२ - सच्चे परमार्थ में पैसा ख़र्च करना नहीं चाहते, मगर जब कभी तकलीफ़ होवे, या दिखावे और शोहरत

की चाह या कुछ मतलब होवे, तो वहाँ ख़ुशी के साथ ख़र्च करते हैं।।

१३ - पाखंडी परमार्थियों की महिमा जो कि अनेक तरह के स्वांग बना कर और अपनी देह को तकलीफ़ देते हैं, बहुत जल्द चित्त में समाती है, और वहाँ उमंग के साथ दर्शन और सेवा करते हैं, लेकिन सच्चे परमार्थियों के संग में उनका मन नहीं लगता और न उन पर भाव आता है।

१४ - यह थोड़ा सा हाल संसारी जीवों के स्वभाव और आदत का (जो संसारियों के संग से पैदा होते हैं) लिखा गया है। जो संतों का सतसंग भाग से मिल जावे, तो यह स्वभाव बहुत जल्द दूर होकर सच्चे भक्त और प्रेमी जन के मुवाफ़िक़ बर्तावा जारी होना मुमकिन है।।

१५ - बग़ैर संतों और अंतरमुख अभ्यासियों के सतसंग के, संसारी स्वभाव और आदतों का बदलना मुमकिन नहीं है। इस वास्ते हर एक शख़्स को जो अपने जीव का सच्चा कल्यान चाहे, मुनासिब है कि संतों या उनके प्रेमी जन का सतसंग तलाश करके उसमें शामिल होवे और उनकी दया लेकर अपना भाग बढ़ावे यानी बचन चित्त से सुन कर और उनका मनन करके, थोड़ी बहुत करनी उनके मुवाफ़िक़ करना शुरू कर दे और उपदेश लेकर अंतर अभ्यास भी जारी कर दे, तो आहिस्ते आहिस्ते सफ़ाई होती जावेगी और कुल्ल मालिक के चरनों का प्रेम हिरदे में पैदा होता जावेगा।

१६ - मालूम होवे कि बिना बाहर के सतसंग के, संशय और भरम किसी के दूर नहीं हो सकते और न मोटे बंधन जगत के कट सकते हैं और न संसार और संसारियों की प्रीति घट सकती है।

१७ - जिस किसी को दुनिया का हाल वक़्त पैदायश से मौत तक देख कर, कुछ सोच और विचार मन में आया है और सच्चा फ़िक्र अपने जीव के कल्यान का पैदा हुआ है, वह शख़्स सतसंग के बचनों को बड़ी तवज्जह के साथ सुनेगा और अपने मन के हाल को उनसे मिला कर फ़ौरन फ़िज़ूल और ना-माक़ूल स्वभाव और बंधन को दूर करेगा और इसी तरह अन्तर और बाहर की सफ़ाई हासिल करने के लिये कोशिश करेगा।।

१८ - जब कि सतसंग करके संत सतगुरु और मालिक के चरनों का थोड़ा बहुत प्रेम हिरदे में जागना शुरू होगा, उस वक़्त अंतर अभ्यास सुरत शब्द मार्ग का थोड़ा बहुत दुरुस्ती से बन पड़ेगा और दया के परचे पाकर प्रीति और प्रतीत चरनों में बढ़ेगी।

१९ - फिर ऐसे सतसंगी की नज़र में दुनिया और उसका सामान और भोग विलास ओछे नज़र आवेंगे और दिन २ उनकी तरफ़ से तवज्जह हट कर, परमार्थ की महिमा चित्त में ज़्यादा से ज्यादा समाती जावेगी।।

२० - उस वक़्त ऐसे सतसंगी का मन दया और मेहर का बल लेकर, विघ्न कारक स्वभाव और तरंगों से जूझ कर उनको दूर हटावेगा या उनका ज़ोर इस क़दर घटावेगा कि फ़िर वह उसके अभ्यास में ख़लल न डालें।।

२१ - ऐसे सतसंगी पर मेहर और दया संत सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दिन २ बढ़ती जावेगी और उसके साथ ही प्रीति और प्रतीत भी उसके हिरदे में नित प्रति बढ़ती जावेगी।।

२२ - जीव की ताक़त नहीं है कि काल और कर्म और मन और माया से मुक़ाबला कर सके, लेकिन संत सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया का बल लेकर उनको हटा सकता है। फिर जिस प्रेमी जन पर ऐसी दया और मेहर है, वही एक दिन माया की हद्द को तै करके, निज धाम में बासा पावेगा और वहाँ हमेशा को सुखी हो जावेगा।।

बचन चौथा

राधास्वामी मत के सतसंगी को अपने उद्धार की निसबत किसी तरह का शक़ और संदेह नहीं करना चाहिये। राधास्वामी दयाल अपनी मेहर से सब कारज उसका दुरुस्त बनावेंगे।

१ - जिस किसी ने कि राधास्वामी मत धारन किया है और उपदेश लेकर सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास कर रहा है, उसको निसबत अपने पूरे उद्धार के, किसी वक़्त और किसी हालत में किसी तरह का शक़ और संदेह मन में नहीं लाना चाहिये और न किसी सबब से अपने मन में निरास होना चाहिये।।

२ - राधास्वामी दयाल की ऐसी दया और मौज है कि जो कोई उनकी सरन में आया है और अपने जीव के कल्याण के वास्ते सच्चे मन से उनके चरन, पकड़े हैं, उसकी वे हर तरह से सम्हाल और ख़बरगीरी आप करते हैं। और जिस क़दर भक्ति और भजन उससे बन पड़े, उतने ही को मंज़ूर और क़बूल फ़रमा कर अपनी दया की बख़्शिश फ़रमाते हैं, यानी अख़ीर वक़्त पर उसकी सुरत की सम्हाल आप करते हैं और अपने दर्शन देकर और शब्द सुना कर सहज में उसकी सुरत को पिंड से न्यारा करके ऊँचे देश और सुख स्थान में बासा देते हैं। और फिर आइन्दा, ज़रूरत के मुवाफ़िक़, एक दो या तीन बार सतगुरु के संग नर देही में लाकर, और बाक़ी करनी करा कर, निज स्थान में पहुँचाते हैं।।

३ - हरचंद कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने कई बार अपने मुख से ऐसा बचन फ़रमाया (और वह कई जगह बानी में लिखा हुआ मौजूद है) कि जो जीव हमारी सरन में आया है या सच्चे मन से दीन अधीन हुआ है या जिसने प्रेम के साथ सतसंग और अभ्यास किया है और हमने प्रसन्न होकर उसको अपनाया है, इन सब जीवों का फ़िक्र और ख़्याल हम आप रखते हैं और उनसे जैसी और जिस क़दर करनी बन पड़े, करा कर सुख स्थान में और फिर एक दिन उनको निज धाम में पहुँचावेंगे।।

४ - लेकिन मन का ऐसा स्वभाव है कि जब इससे करनी, मुवाफ़िक़ हुक्म के, न बन पड़े या तरंगें विकारी और फ़िज़ूल उठाता रहे, तो अपने उद्धार की निसबत

फ़ौरन शक़ और संदेह ख़ातिर में लाकर दुखी हो जाता है और डर जाता है कि ऐसी सूरत में सतगुरु राधास्वामी दयाल उसका उद्धार कैसे करेंगे। और जब अक्सर मन की ऐसी हालत होती रहती है और जीव का बल वास्ते उसकी सम्हाल के पेश नहीं जाता, तब किसी क़दर निरासता चित्त में आ जाती है और ऐसा ख़्याल पैदा होता है कि जब मन में ऐसी नापाकी धरी हुई है और जब तब संसार और उसके भोगों की तरफ़ झोके खाता है और रोकने से नहीं रुकता, तो वह ऊँचे और शुद्ध स्थान में बासा पाने के क़ाबिल कैसे हो सकता है।।

५ - ऐसी हालत में चाहे जिस क़दर बचन तसल्ली और दिलासा के सुनाये और समझाये जावें, लेकिन जब तक कि अपने मन की किसी क़दर दुरुस्ती नज़र न आवे या ख़ास दया की वजह से अभ्यास में दुरुस्ती या कुछ तरक़्क़ी मालूम न पड़े, तब तक मन को तसल्ली और संतोष नहीं होता और उसकी हालत सुस्ती और उदासीनता या निरासता की नहीं बदलती।।

६ - जब जीव अपनी कसरों को निहारता है और जिस क़दर इसका बल है, उस क़दर कोशिश भी उनके दूर करने के वास्ते करता है, फिर भी वह कसरें ब-दस्तूर क़ायम रहती हैं, तब यह जीव लाचार होकर दया माँगता है और जो वह दया फ़ौरन प्राप्त न हुई तो निरास हो जाता है।।

७ - लेकिन यह मुक़ाम ग़ौर का है कि जिस क़दर कसरें और विकारी तरंगें मन में पैदा होती हैं या धरी हैं, उन सब की जड़ संसारी भोगों की बासना है, जो

कि गुप्त या प्रकट मन में बसी हुई है। इस वास्ते जो ऐसे जीव पर पहिले दया की जावेगी, वह बासना के दूर करने या पूरा करके निकालने के वास्ते होगी और जब बासना की सफ़ाई हो लेगी, तब कुछ अंतर में अभ्यास की दुरुस्ती या सफ़ाई या तरक़्क़ी नज़र आवेगी। इस सबब से इस क़िस्म के सतसंगी, जब वे प्रार्थना करते हैं और उन पर दया भी होती है मगर उस दया की उनको परख नहीं होती, तो वे बे-फ़ायदा अपनी अन-समझता से दुखी या निरास होते हैं।।

८ - बासना की पहिचान बड़ी कठिन है। यह इस क़दर झीनी होती है और अंतर के अंतर से वक़्तन् फ़वक़्तन् इक-बारगी जैसे बिजली चमकती है, पैदा हो जाती है। सिवाय ऐसे सतसंगी के जो हर वक़्त अपने मन और इन्द्रियों की निगरानी और चौकीदारी करता है, दूसरे की ताक़त नहीं कि उसके उत्थान को मालूम कर सके या रोक लगा सके, बल्कि इस दरजे के सतसंगी को भी बाज़ी दफ़े तरंग की ख़बर भी नहीं होती। सबब इसका यही है कि जब तक मन में बारीक से बारीक भी ख़्वाहिश किसी भोग की है, तब तक मन और बुद्धि दोनों उस भोग की तरंग के उठते ही, उसमें आशक्त होकर बे-ख़बर हो जाते हैं और उस तरंग का रस लेने को उसके संग लिपट जाते हैं।।

९ - इस वास्ते जब तक कि पूरी २ या किसी दरजे तक की सफ़ाई अंतर में नहीं होगी यानी चित्त संसारी भोग और इन्द्रियों के विषयों की तरफ़ से, उनको विघ्न कारक और अपने भक्ति और अभ्यास की तरक़्क़ी का विरोधी समझ कर थोड़ी बहुत नफ़रत नहीं करेगा, तब

तक बासना और उसके साथ तरंगें नही घटेंगी और मन और इन्द्रिय ऐसी तरंगों के साथ लिपट कर बहते रहेंगे और अभ्यास में ख़लल डालेंगे और जो अभ्यासी होशियार नहीं है, तो उसको ऐसी हालत अपने मन और इन्द्रियों के बहने की ख़बर भी नहीं पड़ेगी और वह ऐसा ख़्याल करेगा कि मैंने इतनी देर तक बराबर भजन या ध्यान किया और जो अभ्यासी होशियार है तो वह तरंगों को उठते ही रोकेगा और हटावेगा, लेकिन फिर भी ख़ौफ रहेगा कि बाज़ी २ तरंग के साथ उसका मन भी बह जावे और कुछ देर तक ख़बर न पड़े और होश न आवे।।

१० - ऐसे सतसंगी कम हैं कि जो अपने मन और इन्द्रियों की निगरानी और चौकीदारी कर सकते हैं, और यह अभ्यास भी कुछ आसान नहीं है यानी कोई अर्से की मश्क से यह ताक़त थोड़ी बहुत हासिल होगी, फिर भी पूरी ताक़त आने को अर्सा चाहिये।।

११ - सच्चे परमार्थी को जिसको अपने जीव के कल्यान का दिल से फ़िक्र लगा है, मुनासिब है कि सतसंग के वक़्त निहायत चेत कर बचन सुने और उसी वक़्त अपनी हालत से मिलान करता जावे और बाक़ी वक़्त जिस क़दर मुमकिन होवे, अपने मन की बासना और तरंगों की निगाह रक्खे कि आया वह मुनासिब हैं या ना-मुनासिब। और जो ना-मुनासिब हैं तो उनको विघ्न कारक समझ कर, फ़ौरन उठते ही रोके और तरंग की धारा को बहने न देवे, तो अलबत्ता कोई अर्से में मन और इन्द्रियों के सम्हाल की ताक़त किसी क़दर हासिल होना मुमकिन है। यह काम सतसंग के बचनों का असर और नाम और स्वरूप के अभ्यास यानी

सुमिरन और ध्यान का बल लेकर दुरुस्ती से बनना मुमकिन है।।

१२ - लेकिन ज़्यादा तर दुरुस्ती से यह काम यानी तरंगों का रोकना जब बन पड़ेगा, जब कि मन में भोगों की तरफ़ से किसी क़दर बैराग और ना-मुनासिब बर्ताव का खौफ़ होगा। नहीं तो चौकीदार आप चोर से मिल कर चोरी करावेगा यानी मन और बुद्धि की जिस भोग की तरंग में आशक्ति है, लिपट कर चैतन्य धारा को माया की लहरों के साथ बहावेंगे।।

१३ - इस जगह पर यह कहना ज़रूर मालूम होता है कि मन और इन्द्रियों की सफ़ाई और समझ बूझ और बुद्धि की होशियारी बग़ैर कोई दिन चेत कर सतसंग करने के हासिल नहीं हो सकती। क्योंकि बग़ैर सतसंग के, किसी सतसंगी को इस बात की ख़बर भी अच्छी तरह नहीं हो सकती कि उस पर परमार्थ में क्या फ़र्ज़ हैं और कैसे २ उसको परमार्थ यानी भक्ति के मुआमले में बर्ताव करना चाहिये और किस क़दर संसार और उसके सामान से मोह और बंधन तोड़ना या ढीला करना चाहिए, तब सतसंग और अंतर अभ्यास का असर दुरुस्ती से नज़र आवे।।

१४ - जो सतसंगी तेज़-फ़हम और विचारवान और रोशन अक़ल वाले हैं, वे थोड़े दिन सतसंग करके और परमार्थ की रीति ब-ख़ूबी समझ कर, बानी और बचन को हाशियारी से नेम के साथ रोज़ाना पढ़ कर, थोड़ा बहुत सतसंग के मुवाफ़िक़ फ़ायदा उठा सकते हैं यानी अपने मन और इन्द्रियों की सफ़ाई और बासना और तरंगों के रोकने की मश्क़, अपने मकान पर रह कर

कर सकते हैं। और ऐसों के संग से, और सतसंगी कम दरजे वाले भी फ़ायदा उठा सकते हैं।।

१५ - जिस किसी के दिल में सच्चे परमार्थ और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शन हासिल करने का सच्चा शौक़ है, उसकी तबियत में संसार और उसके भोगों की तरफ़ से किसी क़दर नफ़रत या उदासीनता ज़रूर आवेगी। और यह दोनों यानी चरनों में अनुराग और संसार से बैराग सहज में उसके परमार्थ का कारज बनाते जावेंगे और संत सतगुरु का दर्शन और भी उनकी मेहर और दया उसको प्राप्त होवेगी।।

१६ - बड़ा भारी फ़ायदा सतसंग का यह है कि वहाँ परमार्थी जीव, हर एक दरजे के प्रेमियों की समझ बूझ और रहनी और बर्ताव देख कर, सहज में उनके साथ मिल कर भक्ति के अंगों में बर्त सकता है और अभ्यास भी थोड़ा बहुत दुरुस्ती से कर सकता है यानी उसके मन और इन्द्रियों की गढ़त और समझ बूझ और करनी और रहनी की दुरुस्ती जल्द और सहज में होती चली जाती है।।

१७ - कैसी ही कठिन सेवा होवे या कोई मन और इन्द्रियों के भिचाव या रुकाव की हालत होवे, प्रेमियों के ग़ोल में मिल कर परमार्थी आसानी के साथ उस सेवा और हालत में बर्त सकता है। ऐसे ही समझ बूझ और गिरफ़्त यानी पकड़ भी प्रेमियों के संग से सहज में बदल सकती है यानी संसार का भाव और मोह कम, और परमार्थ की क़दर और चाह ज़्यादा, हो सकती है।।

१८ - इस वास्ते संग की महिमा बहुत भारी है। चाहे संसारी कार्रवाई होवे या परमार्थी, दोनों में संग की मदद से काम दुरुस्ती से बनता है यानी संसारियों के संग से संसारी और परमार्थियों के संग से आदमी परमार्थी बन सकता है और इसी तरह जब अन्तर में शब्द का अभ्यास करे, तो शब्द स्वरूपी सतगुरु से मिल कर आप भी शब्द स्वरूप हो जाता है।।

१९ - हर एक सतसंगी को चाहिये कि ऊपर के लिखे हुए बचन को विचार कर जब २ मौक़ा मिले, और चाहे थोड़े दिन के वास्ते होवे, सतसंग में शामिल होकर, और सच्चे परमार्थी और प्रेमियों की हालत देख कर, अपनी समझ और हालत बदलावे। और जब सतसंग प्राप्त न होवे तब राधास्वामी दयाल के बानी और बचन और उनकी शरह और तफ़सील जो दूसरी किताबों मिस्ल प्रेमपत्र वग़ैरा में छपी हुई है, ग़ौर और ताम्मुल के साथ थोड़ा सा रोज़ाना पढ़ कर और अपनी हालत की जाँच और सम्हाल उसके मुवाफ़िक़ करता रहे। इस तरह से भी सफ़ाई होवेगी और राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया से प्रीति और प्रतीत बढ़ती जावेगी और एक दिन कारज पूरा हो जावेगा।।

२० - जो किसी सतसंगी का चित्त ब-सबब न मिलने ख़ातिरख़्वाह रस और आनंद के अंतर में, कभी कभी अपनी अन-समझता से दुखी होवे, तो कुछ मुज़ायका नहीं है। मन का यह भिचाव विरह का जगाने वाला और किसी क़दर सफ़ाई करनेवाला है। कोई दिन या थोड़े अर्से ऐसी हालत रहेगी और फिर मेहर और दया से कुछ रस और आनंद मिल कर मन किसी

क़दर खिलेगा और दया के पर्चे भी मिलेंगे कि जिससे नई प्रतीत और प्रीति और जागेगी। इस क़िस्म का चक्कर अभ्यासियों पर कभी २ आता रहता है।।

२१ - कुल मालिक राधास्वामी सर्व समर्थ हैं और अपने बच्चों की हर वक़्त निगरानी और सम्हाल रखते हैं, वे कभी किसी को ख़ाली नहीं रक्खेंगे। पर शर्त यह है कि सतसंगी के हिरदे में उनके चरनों की थोड़ी बहुत लगन या प्रीति क़ायम होनी चाहिये और सुमिरन ध्यान भजन और बानी का पाठ करके, उनकी थोड़ी बहुत याद हर रोज़ दिल से करता रहे और कभी उनके दरबार से निरास न होवे क्योंकि जैसी दया और मेहर इस समय में जीवों पर करी है और कर रहे हैं, उसका वार पार नहीं है।।

२२ - परमार्थी जीवों को चाहिये कि जिस क़दर अपनी निबलता और निकामता देखें, उसी क़दर समर्थ की सरन दृढ़ करें और चरन मज़बूत पकड़ें। फिर उनके उद्धार में किसी तरह का शक़ नहीं रहेगा और यह कैफ़ियत उनको ख़ुद अपनी ज़िन्दगी में थोड़ी बहुत मालूम हो जावेगी और अख़ीर वक़्त की हालत और सतसंगियों की देख कर या सुन कर पूरा यक़ीन हो जावेगा कि राधास्वामी दयाल हर तरह से उनकी सम्हाल और रक्षा, वक़्त छोड़ने इस देह के, फ़रमावेंगे।।

* * * * * *

बचन पाँचवाँ

जो राधास्वामी दयाल की सरन में आया है, उसको मौज के साथ मुवाफ़िक़त करना मुनासिब और लाज़िम है और प्रेमियों से प्रेम भाव और बाक़ी जीवों से दया भाव का बर्ताव चाहिये।।

१ - राधास्वामी दयाल कुल मालिक और सर्व समर्थ हैं। कुल्ल रचना उनके चरनों के आधार से ठहरी हुई है यानी जो धार कि उनके चरनों से आती है और जो कि सत्तलोक से निकसी है, उसी के आसरे दयाल देश और ब्रह्माण्ड की रचना की कार्रवाई हो रही है। और इसी तरह जो धारें कि त्रिकुटी और सहस दल कँवल से प्रकट हुई हैं, उनके द्वारा पिंडी रचना की कार्रवाई हो रही है। यह सब धारें आपस में एक दूसरे से मदद ले रही हैं यानी ऊँचे की धार नीचे की धार को मदद दे रही है।।

२ - जब राधास्वामी दयाल जीवों के उद्धार के वास्ते संत सतगुरु रूप धारन करके संसार में आवें, तब जैसी मौज जिन जीवों की निसबत होवे, उसी के मुवाफ़िक, धुर से नीचे तक, बर्तावा जारी होता है और जब अपनी ख़ास अंस को संसार में, जीवों के उपकार के वास्ते छोड़ें या भेजें तब भी राधास्वामी दयाल की जैसी मौज जीवों के फ़ायदे और उपकार के वास्ते होवे, वह मौज ब-दस्तूर साबिक़ या उसी अंस के द्वारे धुर से नीचे तक जारी होती है। क्योंकि जैसी मौज

राधास्वामी दयाल की होवे, वही संत सतगुरु स्वरूप के द्वारे और वही जा-ब-जा रचना में यानी हर एक मुक़ाम से जारी होगी और उसमें किसी तरह की कमी बेशी नहीं हो सकती।।

३ - अब समझना चाहिये कि ऐसी सूरत में राधास्वामी मत के सतसंगी को मुनासिब और लाज़िम है कि जैसी मौज जिस समय में जारी होवे, उसके साथ जैसे बने तैसे मुआफ़क़त करे यानी जो सख़्त होवे तो उसके बरदाश्त की कोशिश करे और जो बरदाश्त की पूरी ताक़त न देखे, तो सख़्ती कम व्यापने या बर्दाश्त की ताक़त हासिल होने के वास्ते संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रार्थना करे।।

४ - राधास्वामी मत के सतसंगी को ग़ौर से मुलाहज़ा करना चाहिये कि बग़ैर मौज के साथ मुवाफ़क़त किये, चाहे ख़ुशी से होवे या ज़बरदस्ती, गुज़ारा नहीं होगा। संसारी जीव रो पीट कर और बुद्धिमान समझ बूझ और विचार करके और प्रेमी जन अपने मालिक यानी भगवंत की मरज़ी और हुकम समझ कर मुवाफ़क़त करते हैं। बाज़े कच्चे भक्त शिकवा और शिकायत करने लगते हैं, लेकिन जब मौज की मसलहत समझ में आती है, तब अपने हाल पर शरमिंदा होकर क़सूर की माफ़ी के वास्ते प्रार्थना करते हैं।।

५ - मौज की मसलहत वक़्त पर नहीं जनाई जाती हैं, वरना मुवाफ़क़त करने में कोई तकलीफ़ न होवे, लेकिन जब सतसंगी का फ़ायदा इसी तरह की कार्रवाई में मंज़ूर होता है, तब वह मसलहत आइन्दा किसी

वक़्त-मुनासिब पर जताई जाती है और उसी वक़्त यह सतसंगी भी क़ाबिल उसके समझने के होता है।।

६ - जब प्रेमी सतसंगी ऐसी आदत करेगा कि हर काम में मौज को निहारता चले और मौज और दया का ही आसरा और भरोसा रक्खे और जो कुछ करे मौज के आसरे करे और जो कुछ कि दुनिया में हो रहा है या होवे, उसको भी मौज ही का ज़हूरा समझे, तब इसके चित्त में रंज या ग़ुस्सा या विरोध या शिकायत नहीं पैदा होगी। सिर्फ़ जब कि पूरी ताक़त बरदाश्त की न होगी, तो दया के वास्ते प्रार्थना करेगा और मेहर से उसको ताक़त बरदाश्त की मिलेगी।।

७ - जब प्रेमी सतसंगी का संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में, इस तरह भाव और प्यार बराबर क़ायम रहेगा, तब प्रेमी सतसंगियों में भी इसकी मुहब्बत बराबर रही आवेगी और बाक़ी जीवों की हालत को दया की नज़र से देखेगा।।

८ - जो सतसंगी कि गृहस्थ आश्रम में है, उसके मन की हालत हमेशा बदलती रहती है यानी कभी दुखी और कभी सुखी और कभी चिन्ता और फ़िक्र में गिरफ्तार रहता है और यह दुख सुख और चिन्ता चाहे अपनी देह और माल और कर्म के सबब से होवे या दूसरे अज़ीज़ और रिश्तेदार के कर्मों की वजह से आयद होवे, इन दोनों में थोड़ा सा फ़र्क रहेगा, लेकिन मौज पर क़ायम होना और उसके साथ मुवाफ़क़त करना बड़ा कठिन मालूम होता है, क्योंकि अपने ऊपर जो हालत गुज़रे, उसकी निसबत अपने स्वामी प्रीतम की मौज क़ायम कर सकता है, लेकिन दूसरे लोगों की निसबत जो

भक्ति में नहीं आए हैं, कर्म प्रधान रहेगा यानी वे अपने अगले पिछले कर्मों का फल भोगते हैं और उसमें कमी बेशी नहीं हो सकती यानी उनको अंतरी सहारा नहीं मिल सकता है।।

९ - जो कोई पूरा परमार्थी है यानी जिसका प्रेम और अभ्यास ज़बर है, वह सब हालतों में मौज को सही करता है और सख़्ती और नरमी में चरनों की तरफ़ चित्त जोड़ कर कर्मों के असर से किसी क़दर बचाव हासिल करता है और जिस क़दर उसका मोह घरबार और कुटुम्ब परिवार में कम है, उसी क़दर इनके सबब से दुख सुख और चिन्ता भी उसको कम व्यापती है, लेकिन जिसकी परमार्थी हालत ऐसी ज़बर नहीं है, वह अलबत्ता थोड़ी देर के वास्ते झोके और झकोले खा जाता है।

१० -ख़ुलासा यह है कि जीव हर तरह से निबल है और अपनी ताक़त से जैसा कुछ कि भक्ति अंग का बर्ताव अंतर और बाहर चाहिये, नहीं कर सकता। अलबत्ता संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की दया से सब काम इससे दुरुस्त बन सकते हैं। सो जो कोई सच्चे मन से हर काम में संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की मौज और मेहर निहारता चलता है और क्या ज़माना हाल[१] और क्या आइन्दा[२] कार्रवाई में मेहर और दया का भरोसा रखता है और अपनी ताक़त या अहंकार किसी काम में पेश नहीं करता, तो उसकी कुल कार्रवाई की सम्हाल और ख़बरगीरी संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल आप करते हैं और जो किसी

१ - ज़माना हाल = वर्तमान काल।

२ - ज़माना आइन्दा = भविष्य काल।

बात में कसर रहे या हर्ज और नुकसान वाकै होवे, वह भी उनकी मौज से समझना चाहिये, जिसकी मसलहत, चाहे इसकी समझ में आवे या नहीं, मगर ज़रूर उसमें मन की गढ़त यानी मान और अहंकार और बड़ाई की चाह तोड़ने की मंज़ूर होगी।।

११ - कुल मालिक राधास्वामी और संत सतगुरु दयाल हैं और जीवों की निबलता और लाचारी की हालत से खूब वाक़िफ़ हैं। जिस क़दर जिससे कार्रवाई परमार्थ की बनती है, उतनी ही को मंज़ूर करके दया फ़रमाते हैं और जीव को पूरे उद्धार के हासिल करने के वास्ते हर तरह से मदद देकर, एक दिन उसका काम पूरा बनाते हैं। इस वास्ते किसी जीव को अपनी कसरें या ना-ताक़ती देख कर, उनकी दया की तरफ़ से निरास नहीं होना चाहिये, बल्कि अपने को निबल देख कर, उनके चरन ज़्यादा मजबूती के साथ पकड़ना और सरन को ज़्यादा दृढ़ करना चाहिये। वे ज़रूरत के वक़्त हमेशा इसकी सहायता करेंगे और जब मुनासिब होगा, उसको उसकी कसर जता कर और अपने बल की मदद देकर, उस कसर को दूर करावेंगे।।

१२ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रेम और निश्चय होने से, प्रेमी सतसंगी कि हिरदे में ज़रूर प्यार और भाव उन लोगों की तरफ़ आवेगा, जो राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की भक्ति में आये हैं और उनके चरनों में दिन दिन प्रीति और प्रतीत बढ़ाते हैं। यह लोग निज भाइयों से ज़्यादा प्यारे लगेंगे और उनके संग से दिन दिन प्रेम रस और भक्ति अंग की तरक़्क़ी होगी।।

१३ - प्रेमी परमार्थी कुल रचना में अपने प्रीतम राधास्वामी दयाल की अंशों को व्यापक और कार्रवाई करने वाला देखता है और चाहे उन अंशों की तवज्जह अपने अंशी राधास्वामी दयाल की तरफ़ आई है या नहीं, उसकी नज़र उनकी तरफ़ दया भाव की रहती है यानी उनके साथ प्रीति और मेल तो नहीं कर सकता, लेकिन उनकी हालत पर रहम करता है और उनके उबार के वास्ते मदद देने को हमेशा तैयार रहता है और उनसे किसी सूरत में विरोध या असली नुक़सान पहुँचाने या ईज़ा देने का इरादा नहीं करता, चाहे वे अपनी अन-समझता से उसके साथ विरोध करें और नुकसान और तकलीफ़ भी पहुँचावें। अलबत्ता वह तरकीब कि जिससे यह लोग राह रास्त पर आवें और सच्चे मार्ग में लग जावें, ज़रूर अमल में लाता है, चाहे धमका कर या ख़ौफ़ दिला कर या कुछ चिन्ता और फ़िक्र पैदा करके या कोई हर्ज और नुक़सान का डर दिखा कर, वग़ैरा वग़ैरा।।

१४ - मालूम होवे कि परमार्थ यानी भक्ति मार्ग के जारी करने के वास्ते, किसी पर जब्र या ज़बरदस्ती करना या बेजा ज़ोर डालना या किसी तरह का लालच देना या फुसलाना और बहलाना या उसको नुक़सान देना, किसी सूरत में जायज़ और मुनासिब नहीं है। सिर्फ़ बचन सुनाना चाहिए और जो नुक़सान और तकलीफ़ें ब-सबब संसार और उसके भोग बिलास में अटके और लिपटे रहने के पैदा होती हैं, उनको जता कर होशियार करना मुनासिब है। जो कोई माने और भक्ति मार्ग में शामिल होने का शौक ज़ाहिर करे, उसको मदद देना और जो कोई न माने और हुज्जत

और तकरार बे फ़ायदा करे, उससे ज़्यादा कुछ न कहना और चुप हो रहना चाहिए और राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की मौज के मुन्तज़िर रहना चाहिये।।

बचन छठवाँ

मालिक के चरनों में प्रीति और प्रतीत करना और बढ़ाना और दुनिया और उसके सामान और दुनियादारों से भाव और प्यार कम करना और घटाते जाना।।

१ - जो कि रचना का रचाव और ठहराव प्रेम यानी खैंच और बनाव शक्ति पर मुनहसिर है, इस वास्ते कुल कामों में प्रथम यही शक्ति प्रकट होकर काम देती है।।

२ - जब तक किसी का किसी तरफ़ झुकाव या लुभाव या बँधाव नहीं है, तब तक वह उस तरफ़ को कभी रुजू या मेल नहीं करता।।

३ - इसी तरह जब तक किसी की चाह या ख़्वाहिश किसी काम या चीज़ की नहीं होती है, तब तक उससे जतन या मेहनत उस काम के पूरा करने या चीज़ के हासिल करने के लिए नहीं बनती।

४ - ऐसे ही जहाँ दो चार या ज़्यादा आदमियों का मेल मिलाप है, वह भी बग़ैर कुल्ल के झुकाव के एक तरफ़ या आपस में एक दूसरे की तरफ़ के नहीं हो सकता, चाहे यह मेल और झुकाव क़ुदरती रिश्तेदारी के सबब से होवे या कोई ख़ास मतलब हासिल करने

के लिए सब एक जगह जमा होवें या अपने २ मतलब और स्वार्थ के लिए, एक की तरफ़ जहाँ से वह मतलब बनता होवे, रुजू लावें।।

५ - इस तरह दुनिया के कुल काम चाहे वह मामूली होवें, जैसे रोज़गार और व्यापार और व्यवहार या ग़ैर-मामूली होवें, जैसे विद्या और बुद्धि से नई बात, नया इल्म, नई कल, नई चीज़, नया कारखाना, नई क़िस्म की कार्रवाई पैदा करना, सब प्रेम यानी खैंच शक्ति से, जिसको चाहे शौक़ कहो चाहे लाग, चाहे इश्क़ चाहे ख़ास स्वभाव और आदत या बंधन और मोह या ख़्वाहिश, चलते और बनते हैं। बग़ैर इस शक्ति के किसी क़िस्म की कार्रवाई, गुप्त या प्रकट हो नहीं सकती।।

६ - इसी शक्ति यानी प्रेम और लगन के सबब से मनुष्य हर तरह की मेहनत और मशक़्क़त और अनेक तरह की तकलीफ़ और सख़्ती की बरदाश्त करते हैं और कोई क़िस्म का लालच करके (जैसे नामवरी और मान बड़ाई या धन और माल की चाह) जान तक देने को तैयार हो जाते हैं और दे देते हैं।।

७ - यह लगन या शौक़ या चाह या झुकाव और लुभाव संग और सुहबत करके पैदा होता है यानी जिस तरफ़ एक ग़ोल या फ़िरके या मजमे या संगियों का झुकाव और शौक़ है, उसी तरफ़ को उस शख़्स का जो इनका संग करेगा, झुकाव और शौक़ बढ़ता जावेगा।।

८ - यही सबब है कि संसारी लोगों के जिनकी दुनिया में बहुत कसरत है, संग करने से हर कोई चाहे लड़की होवे या लड़का, दुनिया की चाहें और लगन

दिन २ पैदा करते और बढ़ाते जाते हैं। फिर जो दुनिया के शौक़ और लगन के पक्के हो जाने के बाद कोई उनको परमार्थी बचन सुनावे या दुनिया के जाल से निकसने की जुगत बतावे, तो वह उसको तवज्जह के साथ नहीं सुनते, बल्कि अपनी बुद्धि के मुवाफ़िक़ संसारी शौक़ और लगन की बड़ाई और पकाई के निसबत दलील और हुज्जत पेश करके संतों के बचन का ऐतबार नहीं करते।।

९ - दुनिया में लोग इस क़दर लिप्त हो रहे हैं कि उनको इस बात की ख़बर भी नहीं पड़ती कि यह जगह नाशमान और धोखे की है और यहाँ पूरा और ठहराऊ आराम किसी को हासिल नहीं है और न हो सकता है।।

१० - बहुत कम ऐसे जीव हैं कि जो दुनिया की हालत को देख कर और जीवों की ख़राबी और परेशानी मुलाहज़ा करके खोज इस बात का करें कि परम सुख का स्थान कहाँ है और कैसे मिले।।

११ - लेकिन संत सतगुरु कि जो सच्चे कुल मालिक के निज पुत्र और निज मुसाहब हैं, दुनिया के जीवों की ख़राब हालत देख कर, अति दया करके उनसे फ़रमाते हैं कि तुम्हारा निज घर कुल मालिक राधास्वामी के धाम में है और वही परम सुख और अमर आनंद का स्थान है, जहाँ किसी क़िस्म का कष्ट और क्लेश और जनम मरन का दुख नहीं है। और यह देश माया और ब्रह्म का है और इन्होंने अनेक तरह की रचना तुम्हारे फँसाने और इसी देश में क़ैद रखने के लिये करी है कि जिससे तुम्हारा छुटकारा मुशकिल हो गया है। जो इस क़ैद से और जनम मरन के चक्कर

और दुख सुख से (जो देह धर कर भोगना पड़ता है) छूटना चाहो, तो संत सतगुरु की सरन में आओ। वे आप निज धाम के बासी हैं और तुमको भी वहाँ अपनी दया के बल से पहुँचा सकते हैं और ब्रह्म और माया और उनकी रचना के जाल से भी निकाल सकते हैं। और जो इस बचन को न मानोगे तो संसार में ऊँचे नीचे देश और ऊँची नीची जोन में भरमते रहोगे और बारम्बार देह धर कर दुख सुख और जनम मरन का कलेश सहते रहोगे।।

१२ - यह बचन ख़ास दया का भरा हुआ कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने, जब संत सतगुरु रूप धारन करके संसार में प्रकट हुए, अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाया और संत भी जो उनकी निज अंश हैं, यही कहते हैं। जो जीव उनका बचन मानते हैं वे ही बड़भागी हैं और उन्हीं का छुटकारा देह और दुनिया से दिन २ होता जाता है।।

१३ - जो जीव दुनिया के हाल को देख कर परमार्थ का खोज थोड़ा बहुत करते हैं, उन्हीं का संजोग मौज से ख़ुद संत सतगुरु या उनकी संगत से लगता है और वेही चित्त देकर बचन सुनते और मानते हैं।।

१४ - इसी क़िस्म के जीवों को जिनके मन में मौत और बारम्बार देह धर कर दुख सुख भोगने का डर पैदा हुआ है, संत सतगुरु इस तरह पर समझाते हैं कि जैसे दुनिया के कुल काम शौक़ और मेहनत के साथ सरंजाम पाते हैं, ऐसे ही परमार्थ की कार्रवाई भी यानी अपने निज घर की तरफ़ चलने की तरकीब तब दुरुस्त बनेगी, जब कि सच्चा शौक़ कुल मालिक राधास्वामी

दयाल और उनके निज धाम के दर्शनों का मन में पैदा होगा और सच्चा ही ख़ौफ़ जनम मरन और दुख सुख के चक्कर में पड़े रहने का मन में जागेगा।।

१५ - यह शौक़ मन और सुरत की तवज्जह को संसार और संसारियों की तरफ़ से हटा कर, संत सतगुरु और सच्चे मालिक के चरनों में लगावेगा और जिस क़दर रस और आनन्द सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करके अन्तर में मिलता जावेगा उसी क़दर बंधन और मोह, संसार और उसके सामान का, मन से घटता जावेगा।।

१६ - माया के रचे हुये पदार्थ और इन्द्रियों के भोगों में खैंच शक्ति बहुत है। हर एक के मन और इन्द्रियों को, वे अपनी तरफ़ मुतवज्जह करके, किसी क़दर अपने संग लपेट लेते हैं, यहाँ तक कि फिर उनका छूटना या बंधन का ढीला होना बहुत मुशकिल हो जाता है। इस वास्ते जब तक कि मन और सुरत को कुछ विशेष रस और आनन्द अंतर में नहीं मिलेगा या उसके प्राप्ति की आसा और चाह दृढ़ न होगी, तब तक संसारी पदार्थों और भोगों की तरफ़ से, चित्त में सच्ची नफ़रत या उदासीनता नहीं आवेगी।।

१७ - यह बात सिर्फ़ संतों के या उनके प्रेमी जन के संग से हासिल हो सकती है क्योंकि इनकी मोहब्बत सर्व अंग करके कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में लगी हुई है और संसारी सुखों को उन्होंने तुच्छ और नाशमान समझ कर छोड़ दिया है या उन में बर्ताव कम कर दिया है।।

१८ - एक सूरत संसार और भोगों की तरफ़ से

हटने की यह भी है कि इस शख़्स को कोई सख़्त सदमा या रंज या बीमारी वाक़ै होवे या संसार और भोगों की तरफ़ से किसी क़िस्म का दुख पहुँचा होवे, तो भी लाग ढीली हो जाती है, लेकिन इसका कुछ ऐतबार नहीं है, क्योंकि जब किसी क़िस्म का भारी सुख या माया के पदार्थ विशेष करके प्राप्त होवें, तब रंज और दुख को भूल कर मन और इन्द्रियाँ फ़ौरन संसार और भोगों में ब-दस्तूर लिपट जाती हैं।।

१९ - इस वास्ते यह हुक्म संतों का क़तई समझना चाहिये कि बग़ैर उनके सतसंग और सुरत शब्द मार्ग के अंतर अभ्यास के जिससे मन और सुरत ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ेंगे, और कोई तरकीब संसार और उसके भोगों की तरफ़ से सच्चा बैराग हासिल होने की नहीं है।।

२० - संत सतगुरु और प्रेमी जन के सतसंग से दिन २ प्रीति और प्रतीत कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में बढ़ती जावेगी और उसी क़दर और तरफ़ की प्रीति और बंधन ढीले होते और घटते जावेंगे।।

२१ - सच्ची प्रीति का क़ायदा है कि प्रेमी को एक दिन उसके प्रीतम से मिला कर छोड़ेगी, सो जब कि झुकाव और खिंचाव चरनों में ज़बर होता चला, तो सुरत और मन भी नीचे देश यानी पिंड को छोड़ कर ब्रह्मांड में चढ़ेंगे और फिर वहाँ से सुरत मन से न्यारी होकर, अपने निज देश में कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँच कर बासा पावेगी। इसी का नाम सच्चा उद्धार और सच्ची मुक्ति है।।

२२ - यह काम जल्दी का नहीं है। आहिस्ते २ बाहर सतसंग और अंतर अभ्यास करके मन और सुरत की हालत बदलती जावेगी यानी चरनों में अनुराग और संसार से बैराग पैदा होता और बढ़ता जावेगा। और एक दिन सुरत कुल्ल रचना से न्यारी होकर, राधास्वामी धाम में विश्राम पावेगी।।

बचन सातवाँ

भक्ति मार्ग और अन्तर अभ्यास की कमाई की हालत में, कुल मालिक राधास्वामी दयाल को एक देशी और भी सर्व देशी मानना चाहिये, नहीं तो उनके निज धाम में पहुँचना कठिन होगा और यह सिर्फ़ मानन नहीं है, बल्कि हक़ीक़त में सच्चे मालिक का ज़हूरा इसी तौर पर हुआ है।।

१ - जितने मत कि इस वक़्त में दुनिया में जारी हैं, वे सब कुल मालिक को सर्व व्यापक और सर्व देशी समझते हैं और इस सबब से उससे मिलने के वास्ते चलना और चढ़ना बहुत कम मानते हैं।।

२ - जो कोई मालिक को सर्व देशी मानते हैं, तो वे एक ठिकाने पर ध्यान नहीं कर सकते, क्योंकि कोई ख़ास मुक़ाम उसका मुक़र्रर नहीं हो सकता। फिर उनका ध्यान भी जैसा चाहिये, दुरुस्त नहीं बन सकता।।

३ - अक्सर मालिक को आकाशवत व्यापक मानते हैं और आकाश को ही उसका नमूना समझ कर ध्यान करते हैं या रोशनी का जैसे धूप या चाँदनी छाई हुई होती है, ध्यान करते हैं और उसी को चिदाकाश यानी चैतन्य आकाश मानते हैं। यह ध्यान मन के मुक़ाम पर, चाहे वह हिरदे का स्थान होवे, या तीसरे तिल या त्रिकुटी में, किया जाता है, बग़ैर भेद मुक़ाम और उसके धनी या रास्ते के।।

४ - इस क़िस्म के ध्यान में मन किसी क़दर एकाग्र हो जाता है और रोशनी देख कर आनन्द को प्राप्त होता है। इसी आनन्द में बहुत से ज्ञानी और सूफ़ी मस्त और मगन रहते हैं, पर इस आनन्द के ठहराव का ख़ास कर सख़्ती के वक़्त, पूरा एतबार नहीं हो सकता।।

५ - अब समझना चाहिये कि इस रचना में दो पदार्थ हैं, एक चैतन्य और दूसरा जड़ यानी माया। इस हिसाब से इनके तीन देश हुए, एक निरमल चैतन्य देश, एक चैतन्य और माया की मिलौनी का देश और उसमें दो बड़े दरजे हैं यानी शुद्ध माया देश और मलीन माया देश, पहिले को ब्रह्माण्ड कहते हैं और दूसरे को पिंड और तीसरा माया देश हुआ, जहाँ किसी क़िस्म की रचना नहीं है। इसी मुवाफ़िक़ संतों ने रचना के तीन बड़े दरजे मुक़र्रर किये - पहिला निर्मल चैतन्य यानी सत्त पुरुष राधास्वामी देश जहाँ चैतन्य ही चैतन्य है और किसी तरह की मिलौनी नहीं है, दूसरा निर्मल चैतन्य और शुद्ध माया देश जिसको ब्रह्माण्ड कहते हैं

और तीसरा निर्मल चैतन्य और मलीन माया देश जिसको पिंड कहते हैं।

६ - अब विचार करो कि निर्मल चैतन्य देश कुल्ल मालिक का निज देश है, जहाँ किसी क़िस्म की मिलौनी नहीं है। जो कोई कुल मालिक से मिलना चाहे तो उस देश में जाकर मिले और दूसरे देश में माया की मिलौनी है यानी माया के मसाले के ग़िलाफ़ चैतन्य पर चढ़े हुए हैं और उसका आवरन और परदा हो रहे हैं। इस देश में निर्मल चैतन्य का दर्शन नहीं हो सकता, जब कोई नज़र करेगा तो ग़िलाफ़ नज़र आवेगा। अलबत्ता जिस किसी ने सब ग़िलाफ़ यानी परदों को फोड़ कर और माया के घेर के पार जाकर निर्मल चैतन्य देश में मालिक का दर्शन किया है, वह फिर उसको सर्व देश में देख सकता है। लेकिन बग़ैर अभ्यास और परदों के दूर करने के, सच्चे मालिक का दर्शन कोई नहीं कर सकता। तीसरे दरजे में माया प्रधान है और वहाँ चैतन्य का दर्शन निहायत मुशकिल है।

७ - ऊपर के बचन के मुवाफ़िक़ संतों ने मालिक-कुल को एक देशी और भी सर्व देशी कहा है। बग़ैर एक देशी मानने के चलना और चढ़ना यानी माया की हद्द को तै करना नहीं बन सकता और इस वजह से सच्चे मालिक का दर्शन भी नहीं हो सकता। इस से साफ़ जाहिर है कि सिवाय संतों के और किसी ने जैसा चाहिये, उस मालिक का भेद नहीं जाना और न उसके निज धाम में कोई पहुँचा यानी माया के घेर के पार न गया।।

८ - माया में सिवाय दो बड़े दरजों के और भी कितने ही दरजे हैं और उन्हीं के मुवाफ़िक़ रास्ते में मंज़िल या मुक़ाम जिनको चक्र या कँवल कहते हैं, रचे हुये हैं और हर एक मुक़ाम का शब्द जुदा है। जो सच्चे मालिक के दर्शनों का चाहने वाला है, वह रास्ते और मंज़िलों और शब्दों का भेद लेकर और सुरत शब्द योग का अभ्यास करके सहज में इन मुक़ामों को तै करके माया की हद्द के पार पहुँच सकता है और वहाँ सच्चे मालिक का दर्शन पाकर हमेशा को सुखी हो सकता है। लेकिन जिस जगह भेद नहीं है और न रास्ते और मंज़िलों का हिसाब है, वहाँ चलना और चढ़ना नहीं बनता और इस वास्ते निर्मल चैतन्य देश यानी कुल मालिक के धाम में पहुँचना भी मुमकिन नहीं हैं।

९ - यही सबब है कि किसी मत में, जो आज कल जारी हैं, सच्चे मालिक का भेद कि वह (१) कौन है (२) कैसा है (३) कहाँ है और (४) कैसे मिले, पाया नहीं जाता और न तरीका चलने और चढ़ने का ऐसा आसान कि जिसका अभ्यास हर कोई कर सके, बयान किया है।।

१० - अलबत्ता मुक्ति के हासिल करने के वास्ते बहुत सी तरकीबें बयान की हैं, मगर वह सब शुभ कर्म में दाखिल हैं और उनकी कमाई का नतीजा या फल इस ज़िन्दगी में नज़र नहीं आता यानी बंधनों की निवृत्ति होती हुई और आज़ादगी का कुछ आनंद मिलता हुआ मालूम नहीं होता।।

११ - योग शास्त्र में प्राणायाम के वसीले से छःचक्रों का, जो पिंड यानी मलीन माया देश में वाक़ै

हैं, बेधना बयान किया है, मगर यह अभ्यास प्राणों के रोकने और चढ़ाने का ऐसा कठिन और खतरनाक है कि किसी से दुरुस्त नहीं बन सकता और संजम उसके ऐसे सख़्त हैं कि गृहस्थी से बिल्कुल नहीं बन सकते।।

१२ - वेदांत शास्त्र में तीन स्वरूप यानी अवस्था जीव की और तीन स्वरूप ईश्वर के बयान किये हैं और यही छःदेही या आवरन समझने चाहिये, लेकिन इन परदों के फोड़ने की जुगत सिवाय प्राणायाम के दूसरी नहीं कही है।।

१३ - कहीं कहीं मुद्रा का साधन वर्णन किया है। हरचन्द वह प्राणायाम के मुवाफ़िक़ कठिन नहीं है, लेकिन उसकी चाल छः चक्कर के अंतरगत ख़तम हो जाती है, इस सबब से अभ्यासी माया की हद्द में रहता है, पार नहीं जाता।।

१४ - मालूम होवे कि सिवाय संत अथवा राधास्वामी मत के, और किसी मत में पूरा भेद सच्चे मालिक और उसके निज धाम और रास्ते का नहीं है, बल्कि जिसको उन्होंने ईश्वर और परमेश्वर या ब्रह्म और पारब्रह्म और ख़ुदा माना है, उसका भी भेद, मुक़ाम और रास्ते का, साफ़ साफ़ नहीं कहा और न मिलने की जुगत वर्णन की है।।

१५ - साफ़ २ बचन तो यह है कि जिस मत में दयाल और काल का भेद नहीं है और निर्मल चैतन्य देश का जो माया की हद्द के पार है, कुछ ज़िक्र नहीं है, तो वह मत चाहे जैसा होवे, निरंजन यानी काल पुरुष का है और सिद्धान्त उसका माया के घेर में है,

इस वास्ते उस मत में जीव का पूरा उद्धार किसी सूरत में मुमकिन नहीं है।।

१६ - जो कोई अपना सच्चा और पूरा उद्धार चाहे, उसको चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर और कुछ दिन सतसंग करके और फिर सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करे और सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल की सरन दृढ़ करे, वे अपनी दया से उसका कारज सब तरह दुरुस्त बनावेंगे यानी एक दिन निज घर में पहुँचा कर विश्राम देंगे, जहाँ जनम मरन और देह सम्बन्धी दुख सुख और कष्ट और कलेश बिल्कुल नहीं है और हमेशा आनंद ही आनंद है।।

१७ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने सुरत शब्द अभ्यास को अपनी दया से ऐसा आसान कर दिया है कि गृहस्थ और विरक्त और स्त्री और पुरुष जवान और बूढ़े बल्कि लड़के बाले भी सहज में कर सकते हैं और बहुत जल्द उसका फल और फ़ायदा अपने अंतर में देख सकते हैं और कोई दिन के अभ्यास के बाद कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया और रक्षा अपनी निसबत अंतर और बाहर परख सकते हैं कि जिससे उनको पूरा यक़ीन इस बात का हासिल होगा कि उनके पूरे उद्धार में किसी तरह का शक़ और शुबहा नहीं है।।

१८ - जीव बहुत निबल है और गृहस्थी ख़ास कर अनेक बंधनों और ख़्वाहिशों में गिरफ़्तार रहता है, इस वास्ते उद्धार के लायक़ करनी हर किसी से बन पड़नी निहायत कठिन है। लेकिन राधास्वामी दयाल अपनी मेहर से चाहे जिससे, जो करनी वे मुनासिब और ज़रूर

समझें, बनवालें और अपनी तरफ़ से बख़्शिश में जीव का कारज बनावें। ऐसी दया आज तक जीवों पर कभी नहीं हुई। और हक़ीक़त में सिवाय कुल मालिक राधास्वामी दयाल के या जिसको वे इख़्तियार बख़्शें, और किसी की ताक़त नहीं है कि ऐसी दया की कार्रवाई कर सके।।

१९ - जो जीव कि राधास्वामी दयाल के सन्मुख आये या उनकी संगत में शामिल होकर और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर अभ्यास करते हैं, और चरन सरन दृढ़ करते जाते हैं, उनको महा बड़भागी समझना चाहिये यानी एक दो तीन या चार जनम में, वे निज धाम में पहुँच कर बासा पावेंगे और अमर और परम आनन्द को प्राप्त होंगे।।

बचन आठवाँ

प्रथम ज़रूरत स्वरूपवान सतगुरु और उनकी प्रीति और प्रतीत की है, तब अरूपी सतगुरु यानी कुल मालिक से मेला होगा।।

१ - इस दुनिया में सब जीव नाम और रूप में लग रहे हैं और कुल रचना यहाँ की रूपवान है और हर एक रूप का नाम जुदा २ है, चाहे वह चैतन्य है या जड़।।

२ - जो कोई किसी पदार्थ का भेद सुनावे कि जिस का रूप नज़र नहीं आता या जो अति सूक्ष्म रूप या अरूप है और कोई ख़ास नाम भी उसका नहीं है, तो वह भेद या हाल हर एक की समझ में नहीं आता,

बल्कि उस अरूप और अनाम पदार्थ की मौजूदगी का भी यक़ीन पूरा २ नहीं होता।।

३ - रचना में बहुत से पदार्थ ऐसे सूक्ष्म रचे गये हैं कि वे इस लोक में मुतलक़ नज़र नहीं आते, सिर्फ उनकी कार्रवाई से वे जाने जाते हैं और जिन पदार्थों की कार्रवाई गुप्त है और ख़ास तौर पर जुदा प्रकट नहीं हुई है, उन पदार्थों की किसी को ख़बर भी नहीं है।।

४ - इस दुनिया में कुल रचना स्थूल है और इसका सूक्ष्म और अति सूक्ष्म रूप स्थूल के अंतर गुप्त है। जब तक कि कोई उस स्वरूप के मंडल में न पहुँचे और उसकी अंतर दृष्टि न खुले, तब तक वह सूक्ष्म और अति सूक्ष्म रूप नज़र नहीं आ सकता।।

५ - विद्या और बुद्धिवान लोग दो या तीन दरजे के सूक्ष्म स्वरूप की समझ और कुछ अनुमान कर सकते हैं, लेकिन उसके परे के महा सूक्ष्म स्वरूप और असली अरूप और अनाम पद का कोई अनुमान नहीं कर सकते।।

६ - मालूम होवे कि रचना में तीन दरजे बड़े हैं और हर एक दरजे के पेट में छोटे दरजे हैं। यह लोक तीसरे दरजे में है, इस सबब से यहाँ के लोगों को, चाहे विद्या और बुद्धिवान हैं या नहीं, दूसरे और अव्वल दरजे की रचना की ख़बर भी नहीं हो सकती।।

७ - बल्कि इसी दरजे के ऊँचे मुक़ाम की ख़बर बहुत कम है, क्योंकि सिवाय जोगियों के जो प्राणों को चढ़ा कर छठे चक्र के पार गये, और कोई रास्ते और मुक़ामों का भेद नहीं जान सकता।।

८ - जोगेश्वर ज्ञानी ने प्राण और शब्द का अभ्यास करके, दूसरे दरजे में कई मुक़ाम तै किये और उनका भेद अपनी बानी बचन में इशारे में कहा, लेकिन पहिले दर्जे का भेद सिवाय संतों के और किसी को मालूम नहीं हुआ क्योंकि संत कुल मालिक के ख़ास मुसाहब हैं और वे उसी धाम से जीवों के उपकार और उद्धार के वास्ते तशरीफ़ लाये।।

९ - अब ख़्याल करो कि सबसे ऊँचे मुक़ाम का, जो कुल मालिक राधास्वामी का धाम है, और भी ब्रह्म और पार ब्रह्म पद का, जो दूसरे दरजे में वाक़ै हैं, और भी आत्मा और परमात्मा का जो तीसरे दरजे के ऊँचे मुक़ाम हैं, भेद और कैफ़ियत बग़ैर इन कुल देशों के भेदी और वाक़िफ़कार के किस तरह मालूम हो सकता है? और कुल देश यानी तीनों दरजे के भेदी संत सतगुरु हैं, सो जब तक वे न मिलें, कोई जीव तीनों दरजों और उनके मुक़ामों के रास्ते का हाल और भेद और चलने और रास्ता तै करने की जुगत नहीं जान सकता।।

१० - जब जो कोई भेदी और बासी पहिले या दूसरे या तीसरे दरजे के, जिनको संत सतगुरु और जोगेश्वर ज्ञानी और जोगी कहते हैं, संसार में आये, उन्होंने भेद अपने अपने देश का अधिकारी जीवों को समझाया और चलने की जुगत जोगी और जोगीश्वरों ने प्राणायाम के वसीले से और संत सतगुरु ने सुरत शब्द योग की कमाई से, बतलाई।।

११ - प्राणायाम की जुगत महा कठिन और खतरनाक है और संजम भी उसके निहायत मुशकिल हैं, सो वह

किसी से दुरुस्ती के साथ बन नहीं सकते यानी विरक्त जीव उसकी कमाई में लाचार और आजिज़ हैं, फिर गृहस्थ जीव और ख़ास कर औरतों की क्या ताक़त कि इस अभ्यास को शुरू भी कर सकें ? फिर कोई भी जीव सिवाय चंद ईश्वर-कोटियों के परमात्म या पार ब्रह्म पद तक नहीं पहुँचा और सब के सब कर्म और धर्म में अटक कर रह गये।।

१२ - जो कि दूसरा दरजा निर्मल चैतन्य और शुद्ध माया का देश है और तीसरा दरजा निर्मल चैतन्य और मलीन माया देश कहलाता है, इस वास्ते जोगी और जोगीश्वर ज्ञानी, जो प्राणायाम का अभ्यास करके तीसरे और दूसरे दरजे के ऊँचे मुक़ाम में, जो परमात्म पद और पार ब्रह्म पद है, पहुँचे, वह माया के घेर में रहे और उसकी हद्द के पार जो संतों का देश है, न गये। तो फिर उन जीवों का जो तीसरे और दूसरे दरजे के ऊँचे मुकामों से बे-ख़बर रहे और चलने और चढ़ने का जतन न उनको मालूम हुआ और न उन्होंने कभी उसका अभ्यास किया, क्या हाल कहा जावे ? यह सब जप तप और तीर्थ व्रत और मूर्ति पूजा और अनेक तरह के कर्मों में, मुवाफ़िक़ उपदेश ब्राह्मणों और भेषों के (जो आप असली परमार्थ से बे-ख़बर हैं) अटके और फँसे रहे और इस सबब से उनका जनम मरन और ऊँचे नीचे देश और ऊँची नीची जोन में बासा ब-दस्तूर जारी रहा यानी सच्ची मुक्ति या उद्धार किसी का नहीं हुआ।।

१३ - जब संत सतगुरु प्रकट हुए और उन्होंने सुरत शब्द योग का भेद प्रकट किया, तब बहुत कम

जीवों ने उनके बचन का एतबार किया, क्योंकि सब के सब बाहरमुखी कार्रवाई में लगे हुए थे। और जोकि उस वक़्त में प्राणायाम की महिमा विशेष थी, तो संतों की जुगत में भी प्राणों का संग थोड़ा बहुत लगा कर उसको कठिन कर दिया और उसके फ़ायदे से महरूम रहे।।

१४ - जब ऐसा हाल जगत का देखा कि कोई जीव घर की तरफ़ नहीं चलता और सब के सब चौरासी में बहते और भरमते जाते हैं, तब कुल मालिक राधास्वामी दयाल आप दया करके जगत में प्रकट हुये और संत सतगुरु रूप धारण करके जीवों को सुरत शब्द मार्ग का उपदेश (बग़ैर प्राणों के संग के) किया और अपने चरनों में जीवों की प्रीति लगाई और महिमा संत सतगुरु और उनके सतसंग की, बजाय मूर्ति और तीर्थ के, खोल कर सुनाई और कहा कि सतसंग रूपी तीर्थ में स्नान करके यानी बैठ कर बहुत जल्द जीव सफ़ाई अंतर और बाहर की हासिल कर सकता है। और बजाय मूर्ति के जो न बोले और न चाले और न संशय और भरम दूर कर सके, संत सतगुरु के चरनों में प्रीति करने से सुरत और मन अंतर अभ्यास में रस ले सकते हैं और ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ाई कर सकते हैं और जगत से सहज बैराग हासिल हो सकता है।।

१५ - इस बचन को जिन जीवों ने चित्त देकर सुना और समझा और हित करके माना, उनको बहुत जल्द अभ्यास का फ़ायदा अंतर में मालूम पड़ा और प्रीति और प्रतीत चरनों में जागने और बढ़ने लगी।।

१६ - जो अभ्यास कि राधास्वामी दयाल ने बताया, वह इस क़दर आसान है कि लड़का जवान बूढ़ा औरत

या मर्द, विरक्त होवे या गृहस्थ, बहुत आसानी से दो चार बार हर रोज़ कर सकते हैं और संत सतगुरु के चरनों में प्रीति भी बहुत आसानी से लगा सकते हैं। क्योंकि दुनिया में स्त्री पुत्र और धन से लगा कर बेशुमार जीवों, माल और असबाब में, कम से कम और ज़्यादा से ज़्यादा दरजे की प्रीति करने की सबको आदत है और प्रीति की रीति का बर्ताव भी हर कोई अच्छी तरह से जानता है, कोई बात सिखाने और समझाने की ज़रूरत नहीं है।।

१७ - प्रीति का क़ायदा है कि इक तरफ़ी नहीं बढ़ती, बल्कि उसका एक रस क़ायम रहना भी मुशकिल है लेकिन जब दोनों तरफ़ से होवे, तब बहुत जल्द बढ़ती है और उसका आनंद और बर्ताव भी दिन दिन ज़्यादा होता जाता है। इसी सबब से जो कोई मूर्त्ति में प्रीति करे, उसका एतबार नहीं हो सकता, कि न तो वह प्रीति बढ़ती है और न कुछ रस और आनंद उसका ख़ास तौर पर प्रीति करने वाले को मिलता है। और जब कोई संत सतगुरु के चरनों में जो कि चैतन्य और समर्थ हैं , प्रीति करे तो वही उलट कर उस पर दया करेंगे और उसकी ताक़त दिन २ बढ़ा कर, गहरा प्रेम चरनों का अंतर और बाहर बख़्शेंगे, तब हालत इसकी सहज में बदलती जावेगी यानी दुनिया की तरफ़ से बैराग और चरनों में अनुराग बढ़ता जावेगा।।

१८ - संत सतगुरु जब जीव को सतसंग में लगाते हैं और चरनों की प्रीति दृढ़ाते हैं, तब पहिले ही भेद कुल मालिक के स्वरूप का जो उनका भी निज रूप है और हर एक के घट २ में मौजूद है, बतौर उपदेश के

समझा कर हिदायत करते हैं कि बाहर और अंतर स्वरूप में बराबर प्रीति लगावे और फिर जिस क़दर अभ्यास में तरक़्क़ी होवे, अंतर के स्वरूप में प्रीति बढ़ाता जावे, ताकि एक दिन निज अरूपी स्वरूप से मेला हो जावे।।

१९ - इस वास्ते जो कोई अपना सच्चा छुटकारा और उद्धार चाहे, उसको चाहिये कि संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होकर उनके चरनों में गहरी प्रीति करे और बचन उनके चित्त देकर सुने और मनन करके अपनी समझ और पकड़ और रहनी बदलता जावे। तब उनकी मेहर और दया से अंतर में रास्ता तै होना शुरू होगा और रफ़्ता २ माया के घेर के पार पहुँच कर, कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में विश्राम पावेगा।।

२० - चैतन्य मूरत संत सतगुरु की है। जो कोई उनसे प्रीति लगावेगा, उसका उद्धार होवेगा और जो काई पत्थर या धात की बनी हुई मूर्त्तियों या कोई और निशान या ग्रन्थ में भाव लावेगा और पूजा करेगा, उसको जिस क़दर तन मन धन लगावेगा, उसके मुवाफ़िक शुभ कर्म का फल मिलेगा, पर उद्धार नहीं होगा।।

२१ - मूर्त्तियों की प्रीति का कुछ ऐतबार नहीं है। अक्सर मूर्त्तियाँ औतारों या देताओं की होती हैं और इनकी लीला बिलास सुन कर या पढ़ कर, लोग उनमें परमेश्वर का भाव लाते हैं, लेकिन वह मूर्त्ति उस भाव के ठहराव या तरक़्क़ी में कुछ मदद नहीं देती, बल्कि जब उसके असली स्वरूप की रहनी और लीला बिलास का वर्णन उल्टी तरह से किया जावे, तो फ़ौरन मुर्त्ति

और उसके औतार स्वरूप में अभाव आ जाता है और भक्ति जाती रहती है। बर-खिलाफ़ इसके चैतन्य स्वरूप जो सच्चा गुरु है, संशय और भरम और अभाव वग़ैरा को अपने बचन सुना कर दूर करेगा और अन्तर अभ्यास करा कर अपने निज रूप में विशेष प्रीति जगावेगा।।

२२ - अब ग़ौर करो कि जब कुल मालिक अनाम और अरूप है और जीव उसकी अंस हैं, तो जब तक कि यह तन मन और इन्द्रियों से बल्कि माया के घेर से न्यारे न होंगे और विदेह होकर कुल मालिक के धाम यानी निर्मल चैतन्य देश में जहाँ माया की मिलौनी नहीं है, नहीं पहुँचेंगे, तब तक जनम मरन और देही के बंधन और कष्ट क्लेश से छुटकारा नहीं होगा और न परम आनन्द प्राप्त होगा।।

२३ - जीव इस क़दर माया में डूब रहे हैं और भूल और भरम का इस क़दर इस लोक में ज़ोर शोर है कि किसी को अपने सच्चे माता पिता कुल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम की सुध भी नहीं रही, बल्कि जो कोई पता और भेद बतावे और निज घर की याद दिलावे, उसके बचन का ऐतबार भी नहीं करते और बजाय मुवाफ़क़त और मुहब्बत के, उस से विरोध बाँधते हैं। फिर किस तरह इन का उद्धार होना मुमकिन है ?

२४ - सिवाय कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के, जब वे नर स्वरूप धारन करके, जगत में प्रगट होवें और सत्त पुरुष राधास्वामी धाम का भेद और चलने का तरीक़ा सुरत शब्द मार्ग के वसीले से

समझावें, और किसी की ताक़त नहीं है कि जीव को इस मार्ग पर चला सके या उस जुक्ति का अभ्यास करा सके, फिर जब इनमें अभाव आया तो कौन सूरत उद्धार की बाक़ी रही ? इसी सबब से कसरत से जीव कुल मतों के चौरासी में भरम रहे हैं।।

२५ - यह क़ायदा है कि जब तक किसी मुक़ाम या इल्म या हुनर का भेदी और वाक़िफ़कार नहीं मिलेगा, तब तक कोई शख़्स उस मुक़ाम या इल्म या हुनर को हासिल नहीं कर सकता। इस वास्ते जो कोई पूरा उद्धार चाहे, वह जब तक कि माया के पार न जावेगा, तब तक कारज उसका नहीं बनेगा।।

२६ - मालूम होवे कि जब कुल मालिक सब रचना के परे है और आप अनाम और अरूप है, तो जितने नाम और रूप और रचना पैदा हुई, वह उसी अरूप और अनाम की धार या किरनियों से ज़ाहिर हुई। फिर जिस मुक़ाम पर कि इस रचना में जीव का क़याम है, वहाँ से जितनी रचना कि ऊपर है, सूक्ष्म और अति सूक्ष्म और महा सूक्ष्म वग़ैरा सबको तै नहीं किया जावेगा, तब तक उस अरूप से मेल किस तरह हो सकता है ? इस वास्ते भेद, रास्ते और मंज़िल और नाम और रूप का, जो जहाँ २ आदि धार के उतार के वक़्त, पैदा हुये, मालूम होना और उसके मुवाफ़िक़ रास्ते का तै होना ज़रूर दरकार है, क्योंकि बग़ैर इस कार्रवाई के किसी अरूप से मिलना ना-मुमकिन है। और यह भेद सिवाय उस देश के भेदी और बासी के, जो संत सतगुरु हैं, दूसरा नहीं समझा सकता और न रास्ता तै करने में मदद दे सकता है।।

२७ - इस वास्ते जब तक नर स्वरूप सतगुरु नहीं मिलेंगे और उनके चरनों में प्रीति और प्रतीत नहीं आवेगी और दया और मेहर उनकी शामिल नहीं होगी, तब तक कोई जीव निज घर और सच्चे मालिक का भेद नहीं जान सकता और न चलने का जतन शुरू कर सकता है और न उस देश में पहुँच सकता है।।

२८ - अनाम और अरूप, संत सतगुरु का निज रूप है और वही अरूप, शब्द स्वरूप होकर प्रकट हुआ। शब्द भी अरूप और निराकार है और सब जगह और घट २ में मौजूद है। सो उसी शब्द की धुन को पकड़ा कर, संत सतगुरु जीवों की सुरत को घट में चढ़ा कर निज धाम में पहुँचाते हैं।।

२९ - जब तक कि रचना प्रकट नहीं हुई, सिवाय अनाम और अरूप के और कुछ नहीं था और जब मौज रचना की हुई, तब वही अनाम और अरूप की धार शब्द स्वरूप होकर प्रकट हुई, सो कुल रचना असल में शब्द स्वरूप है यानी अरूप और निराकार। यही शब्द स्वरूप प्रेमी जीवों को अरूप और अनाम पद में पहुँचावेगा और यही स्वरूप सतगुरु का और सब मुक़ामों और पदों का और भी कुल जीवों का है। बाहर से संत सतगुरु शब्द का भेद देकर और जुगत समझा कर, अंतर में धसाते और चलाते हैं और अंतर में शब्द गुरू सुरत को ऊँचे देश यानी निज धाम की तरफ़ खैंच कर और अपना रूप बता कर, कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँचाता है। इससे ज़ाहिर है कि बाहर से सतगुरु के नर स्वरूप की मदद और अंतर में सतगुरु के शब्द स्वरूप की दया और मेहर के बग़ैर

किसी जीव का कारज नहीं बन सकता और यह दोनों स्वरूप एक ही हैं। शब्द स्वरूप सतगुरु से मिल कर जीव अरूप और अनाम कुल मालिक का, थोड़ा बहुत अनुमान और ध्यान कर सकता है। और तरह से उसको कुछ भी समझ अरूप और अनाम की नहीं आ सकती। और जिन लोगों ने इसी देश में अरूप और अनाम से मिलना, बग़ैर तै करने रास्ते के और सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास के, बयान किया है, वह अपनी समझ के अनुसार जड़ या चैतन्य आकाश से मिले और अपनी ग़लती और नादानी से उसी को अरूप और अनाम क़रार दिया। मगर इस तरह उनके जीव का कारज जैसा चाहिये, नहीं बना।।

३० - मालूम होवे कि हर मुक़ाम पर सरूप और अरूप मौजूद है। एक को वाच यानी शब्द स्वरूप कहते हैं और दूसरे को लक्ष यानी अरूप और निराकार। लेकिन यह सब रास्ते के लक्ष यानी निराकार स्वरूप, असली अरूप नहीं हैं। इन सब के पेट में बीज रूप माया और निहायत सूक्ष्म आकार मौजूद है कि वह अभ्यासी के देखने और समझने में नहीं आ सकता, जब तक कि उससे ऊँचे देश में न चढ़े।।

३१ - संतों के बचन के मुवाफ़िक असली अरूप कि जहाँ किसी क़िस्म का आकार बल्कि रेखा भी नहीं है, सब मुक़ामों के परे है। फिर जो कोई कि माया की हद्द में, जहाँ तहाँ के लक्ष स्वरूप को अरूप और अनाम समझ कर या मान कर रह गये, वे किसी काल के बाद फिर रचना में आवेंगे और जनम मरन के चक्कर से छुटकारा उनका नहीं हुआ। ख़ुलासा यह कि उन्होंने

ब-सबब न मिलने संत सतगुरु के धोखा खाया और रास्ते ही में रह गये यानी उनका पूरा उद्धार नहीं हुआ।।

बचन नवाँ

बाचक ज्ञानियों का अपने तईं ब्रह्म कहना या मानना ग़लत है, जब तक कि अभ्यास करके ब्रह्म को अपने घट में प्रकट न करें।।

१ - आज कल के जमाने में ज्ञानी और सूफ़ी जो कि अपने तईं विद्यावान कहते हैं और असल में विद्या पढ़ कर उन्होंने अपना ज्ञान या समझ दुरुस्त की है, अपने तईं और कुल जानदारों बल्कि रचना को ब्रह्म यानी ख़ुदा कहते हैं। यह कहन उनकी सिर्फ़ ज़बानी है, क्योंकि अपने घट में ब्रह्म के दर्शन की प्राप्ति के बग़ैर यह बचन मुख से उच्चारण करते हैं और इस वास्ते वे बाचक ज्ञानी और बाचक सूफ़ी हैं।।

२ - यह बचन (कि मैं ब्रह्म हूँ) जो उन्होंने बरमला कहा, वह मुवाफ़िक़ क़ौल सच्चे ज्ञानी और सच्चे सूफ़ियों के, जो ब्रह्म पद में पहुँचे और दर्शन पाकर वहाँ यह बोली बोले, सही है मगर यह लोग मन और इन्द्रियों के घाट पर बैठे हुये अपने तईं ब्रह्म मानते हैं, यह ख़्याल उनका ग़लत हैं।।

३ - अफ़सोस का मुक़ाम है कि बाचक ज्ञानी और सूफ़ी अपने मन की हालत कभी नहीं परखते, नहीं तो इनको अपने असली हाल की ख़बर पड़ जाती कि

उनका मन कहाँ २ अटका और बँधा हुआ है और ज़रा २ से आराम और तकलीफ़ में दुखी सुखी होता है, तब यह ऐसा बचन कि मैं ब्रह्म हूँ , प्रकट करके न बोलते।।

४ - इसमें कुछ शक़ नहीं कि ब्रह्म सब जगह मौजूद है, लेकिन इस माया देश में उस पर कितने ही ख़ोल चढ़े हुये हैं, असल सूरत उसकी गुप्त और पोशीदा है। इस वास्ते जब तक कोई शख़्स अभ्यास करके, उन ख़ोलों या परदों को नहीं फोड़ेगा, तब तक ब्रह्म का दर्शन उसको नहीं मिलेगा।।

५ - सच्चे ज्ञानी ने प्राणायाम का अभ्यास करके और अपने मन और सुरत को छः चक्र के पार चढ़ा कर ब्रह्म का दर्शन पाया। पर प्राणायाम की जुगत ऐसी कठिन और ख़तरनाक है कि किसी शख़्स और ख़ास कर गृहस्थी और औरतों वग़ैरा से उसका अभ्यास बिल्कुल नहीं बन सकता, इस सबब से भेष और गृहस्थी दोनों का उद्धार मुमकिन नहीं।।

६ - जबकि ऐसी हालत जीवों की देखी कि कोई भी निज घर की तरफ़ (जो कुल मालिक का धाम है और जहाँ से आदि में सुरत उतरी) नहीं जाता और सबके सब माया के घेर में भरमते हैं, कुल मालिक राधास्वामी ने संत सतगुरु रूप धारन करके सहज मार्ग जीवों के उद्धार का, प्रकट किया। इस जुगत को सुरत शब्द योग कहते हैं और गृहस्थ और विरक्त और स्त्री और पुरुष इसको ब-आसानी कर सकते हैं और फ़ौरन उसका फ़ायदा भी देख सकते हैं।।

७ - जो कोई राधास्वामी संगत में शामिल होकर और उपदेश लेकर सुरत शब्द का अभ्यास शुरू करे, वह एक दिन ब्रह्म पद और फिर माया की हद्द के परे, सत्तनाम और कुल मालिक राधास्वामी दयाल का दर्शन, अपने घट में कर सकता है। घट में दर्शन पाने के बाद फिर पहुँचा हुआ शख़्स कुछ नहीं बोलेगा कि मैं ब्रह्म हूँ या सत्तपुरुष हूँ या राधास्वामी।।

८ - ब्रह्म पद के प्राप्त होने पर जो कोई वहाँ ठहरेगा, उसका पूरा उद्धार नहीं होगा, क्योंकि माया के घेर में रहने से जनम मरन का चक्कर, चाहे बहुत देर के बाद होवे, नहीं छूटेगा, लेकिन जो कोई सत्तलोक या राधास्वामी पद में पहुँचेगा, वह अमर और परम आनंद को प्राप्त होवेगा।।

९ - इस वास्ते कुल जीवों को और बाचक सूफ़ी ज्ञानियों को ख़ास कर लाज़िम और मुनासिब है कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन लेकर, सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास शुरू करें, तो एक दो तीन हद्द चार जनम में उनका सच्चा और पूरा उद्धार हो जावेगा। और जो इस बचन को न मानेंगे, तो हमेशा माया के घेर में ऊँचे नीचे देश और ऊँची नीची जोन में भरमते रहेंगे। और कच्ची बोली जैसे मैं ब्रह्म हूँ, जब तक कि ब्रह्म पद की प्राप्ति न होवे, अपने मुख से न निकालें।।

१० - और मालूम होवे कि ब्रह्म पद की प्राप्ति भी, सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास से होवेगी, और किसी अभ्यास के वसीले से इस ज़माने में चढ़ाई मन और सुरत की मुतलक़ बन्द है और न किसी से दूसरा अभ्यास दुरुस्ती से बन पड़ेगा।।

११ - मुक़ाम नाभि और हिरदे में अभ्यास करके, थोड़ी बहुत सिद्धि और शक्ति या सफ़ाई और रोशनी और नूर का मुशाहिदा[1] हासिल हो सकता है, लेकिन सुरत मन की चढ़ाई छः चक्र के परे बग़ैर अभ्यास राधास्वामी दयाल की जुगत के, किसी तरह मुमकिन नहीं है और न इन अभ्यासों में जीव का उद्धार मुमकिन है, बल्कि जो सिद्धि और शक्ति में अटक गया, तो नीचे के दरजे में गिर जावेगा।।

बचन दसवाँ

सरन और करनी के वास्ते प्रेम और मेहर दरकार है।।

।। सरन का बयान।।

१ - सरन से यह मतलब है कि सर्व अंग करके जीव समर्थ के आसरे और उनके चरनों में दीन और अधीन हो जावे और अपना किसी क़िस्म का बल या ताक़त पेश न करे और न उसका अहंकार मन में लावे, बल्कि अपने आपको निहायत निबल और नाकारा देख कर, समर्थ के चरन दृढ़ कर पकड़े और उनकी ओट लेवे और अपने उद्धार और उपकार के वास्ते, सिवाय समर्थ के दूसरी तरफ़ नज़र या ख़्याल या किसी क़िस्म की आसा न लावे।।

२ - समर्थ से मुराद कुल मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु से है, जो घट २

१ - देखना।

में मौजूद हैं और संत सतगुरु स्वरूप से बाहर सतसंग और उपदेश करते हैं।।

३ - ऐसी सरन बग़ैर कुछ अर्से संत सतगुरु का सतसंग और अंतर में सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करने के हासिल नहीं हो सकती यानी पहिले सतसंग करके समझ-बूझ बदलेगी और संसार की पकड़ ढीली होवेगी और अन्तर में अभ्यास करके और दया पाकर प्रीति और प्रतीत जागेगी और अन्तर और बाहर परचे दया और रक्षा के निरख कर प्रेम पैदा होगा और चरनों में पूरा विश्वास आवेगा।।

४ - जिसको ऐसी सरन प्राप्त है, वह कुल कारोबार में, क्या परमार्थी क्या स्वार्थी, अपने सतगुरु स्वामी की मौज को निहारता है और दया का भरोसा रखता है और फिर मौज से कुल काम उसके थोड़े बहुत सम्हलते और दुरुस्त होते जाते हैं। और जहाँ कहीं और जब कभी कोई काम, इसके मन और चाह के मुवाफ़िक़ नहीं होता, उसमें भी मौज को मुख्य रख कर, उसके साथ जहाँ तक बने, मुवाफ़क़त करता है।।

५ - ऐसे सरन वाले की सुरत में धुर मुक़ाम में पहुँच कर कुल मालिक और अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल के दर्शन का शौक़ बढ़ता रहता है और उसके साथ ही चढ़ाई का रास्ता खुलता जाता है और प्रेम बढ़ता जाता है।।

६ - यह सरन मेहर और दया से हासिल होती है यानी मेहर और दया से जीव का संजोग सतसंग और सतगुरु के साथ लगता है और सतगुरु के बचन और उपदेश के मुवाफ़िक़ करनी बनती जाती है और अन्तर

बाहर फल भी उसका मिलता जाता है और दिन २ कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में विश्वास और भरोसा बढ़ता जाता है और सरन मज़बूत होती जाती है और दर्शनों का प्रेम जागता और बढ़ता जाता है।।

७ - जो कोई संतों की जुगत किताबों या किसी और तौर से दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू करेगा और बानी बचन पढ़ कर और अपनी बुद्धि अनुसार करनी और रहनी दुरुस्त करना चाहेगा और कुल मालिक और संत सतगुरु की दया और मेहर शामिल नहीं है, तो उसका काम पूरा नहीं बनेगा यानी अभ्यास सुरत शब्द मार्ग का बराबर नहीं कर सकेगा, रास्ते में विघ्न वग़ैरा उसको रोकेंगे और डरावेंगे और अनेक तरह के ख़्याल मन में पैदा करके उसको चंचल और मलीन कर देंगे ताकि उसका अभ्यास रुक जावे और सच्चे रास्ते पर क़दम न रखने पावे।।

करनी का बयान

८ - (१) संत सतगुरु का सतसंग करना और चित्त देकर बचन सुनना और विचारना और अपनी समझ और दुनिया में पकड़ और रहनी को उनके मुवाफ़िक़ दुरुस्त करते चलना, (२) सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर विरह और प्रेम अंग के साथ तब अभ्यास करना और अपने मन और सुरत को सचेत कर जिस क़दर बन सके ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ाना और रस लेना, (३) कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रेम पूर्वक भक्ति यानी सेवा और दीनता

करना और उनकी प्रसन्नता हासिल करने के लिये जतन मुनासिब करना, (४) प्रेमी और भक्त जन से प्रीति के साथ बर्ताव करना और जब मौक़ा मिले, उनकी मुनासिब सेवा करना और बाकी जीवों के साथ दया अंग लेकर के बर्ताव करना और (५) मन में अपने उद्धार की चिन्ता और फ़िक्र लगी रहे और अपने मन और इन्द्रियों की चाल को निरखता और सम्हालता चले ताकि पूरे उद्धार में विघ्न न डालने पावे और राधास्वामी धाम मैं पहुँचने के वास्ते रास्ते में न अटकावें।।

९ - ऐसी करनी संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की मेहर और दया के बग़ैर नहीं बन पड़ेगी, और जिस से बन पड़े, वही जीव बड़भागी और मेहरी है।।

१० - ऐसी करनी वाला हमेशा अपने चित्त में दीन अधीन रहता है और अपने मन की कसरों को निहार कर, उनके दूर करने के वास्ते हमेशा कोशिश करता रहता है और संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में विशेष दया और मेहर की प्राप्ति के वास्ते प्रार्थना जारी रखता है।।

११ - ऐसी करनी वाला संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की मेहर और दया का सदा गुन गाता रहता है और अपनी बड़-भागता पर हमेशा शुकर करता है और आइन्दा के वास्ते ज़्यादा दया और तरक़्क़ी की आसा रख कर मगन रहता है।।

१२ - यह शख़्स सेवा में होशियार रहता है, और प्रेम और सेवा की नई नई उमंग उठाता रहता है और सच्चे परमार्थियों का हमेशा मददगार रहता है।।

१३ - इस शख़्स को बड़ा ख़्याल इस बात का रहता है कि उसकी प्रीति और प्रतीत चरनों में दिन २ बढ़ती रहे और किसी तरह से उसमें घाटा न आवे और जब कभी कोई माया या काल के चक्कर से डिगमिग या रूखा फ़ीका भी हो जावे, तो बानी और बचन याद करके या पढ़ कर और बेशुमार परचे जो दया के अंतर और बाहर मिले हैं, उनकी सुध लाकर अपने मन को संत सतगुरु की मेहर और दया से जल्द सम्हाल लेता है और अपनी कसर को देख कर शरमाता और पछताता है और आइन्दा दया के वास्ते प्रार्थना करता है।।

१४ - ऐसी करनी जल्द रास्ता तै कराती है और एक दिन निज धाम में बासा दिलाती है और संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की हर वक़्त मेहर ऐसी करनी करने वाले परमार्थी पर बनी रहती है और उसका कारज बनाती जाती है।।

बचन ग्यारहवाँ

मालिक घट २ में मौजूद है, मगर सिवाय गुरु-ज्ञानी के दूसरे को इस बात की परख नहीं हो सकती है।।

१ - संत मत के मुवाफ़िक़ मालिक हर एक के घट में मौजूद है और ऊँचे से ऊँचा उसका धाम है।।

२ - और मतों के मुवाफ़िक़ भी यह बात सही होती है यानी सब कहते हैं कि मालिक सब जगह मौजूद है।

तो जब कि सब जगह मौजूद है, फिर हर एक के घट में भी ज़रूर मौजूद होना चाहिये। लेकिन स्थान का पता और भेद साफ़ २ किसी मत में नहीं बयान किया।।

३ - अलबत्ता हिन्दुओं के मत में इस क़दर खोल कर बयान किया है कि जहाँ चोटी का स्थान है, वही मालिक का निज धाम है और जीव की बैठक नेत्रों में बतलाई है।।

४ - जोगियों ने रास्ते का भेद, छः चक्र तक प्रकट किया और जोगीश्वरों ने तीन मुक़ाम यानी तीन कँवल, छः चक्र के ऊपर, कहे और सिर्फ़ संतों ने उसके परे का भेद यानी हाल तीन मुक़ाम का जिनको पदम कहते हैं, खोल कर वर्णन किया और इस ज़माने में कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने, संत सतगुरु रूप धारन करके, बाकी के तीन मुक़ामों को खोल कर, निज भेद कुल मालिक का प्रकट किया है।।

५ - यह निज भेद और हाल, रास्ते और मंजिलों का, और जुगत चलने की, निहायत आसान तरीक़े से कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने खोल कर बयान करी है कि जिसको हर कोई औरत और मर्द लड़का जवान और बूढ़ा, गृहस्थ होवे या विरक्त, आसानी से कर सकते हैं और अपने उद्धार की सूरत, सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास से, थोड़ी बहुत जीते जी देख सकते हैं।।

६ - यह ऊँचे मुक़ामों का भेद और तरीका अभ्यास का, और किसी मत में वर्णन नहीं किया है और न किसी दूसरे शख़्स को, सिवाय संत सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के, मालूम है। इस ज़माने में

जीवों पर निहायत दरजे की दया फ़रमा कर कुल मालिक ने आप इस संसार में प्रकट होकर जाहिर किया। जो कोई बचन को माने उसका उद्धार सहज में होता है और नहीं तो हमेशा चौरासी में भरमता रहेगा।।

७ - सिवाय कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के, वे लोग जो कि उनके चरनों में भाव और भक्ति के साथ आये और जिन्होंने कोई दिन सतसंग करके, सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लिया, इस गुप्त भेद से जो कि राधास्वामी मत का निज उपदेश है, वाक़िफ़ हैं और वे ही गुरु-ज्ञानी कहलाते हैं यानी सच्चे गुरू से ज्ञान पाया और सच्चा गुरू जो शब्द है और घट घट में ऊँचे देश में बोल रहा है, उसका ज्ञान पाया यानी भेद लेकर अभ्यास शुरू किया।।

८ - जीव का असली रूप कई परदों में और इसी देह में गुप्त है और जो रूप कि बाहर नज़र आता है, वह स्थूल है और उसके अन्दर सूक्ष्म रूप है, जिससे जीव स्वप्न देखता है और फिर उसके अन्दर कारन शरीर है, जहाँ पहुँच कर जीव आराम के साथ सोता है या रहता है। इन तीन स्वरूपों के परे जीव का तुरिया रूप है, जहाँ से धार पिंड में आकर सब शरीरों को चैतन्य करती है।।

९ - जैसे जीव के तीन स्वरूप या अवस्था हैं, ऐसे ही ईश्वर या ब्रह्म के भी तीन स्वरूप हैं, जिनको माया सबल और साक्षी और शुद्ध या पारब्रह्म कहते हैं।।

१० - संतों का देश जहाँ कुल मालिक राधास्वामी दयाल का निज धाम है, ब्रह्म और पारब्रह्म पद के परे और बहुत दूर है। फिर ख़्याल करो कि जो लोग

मालिक को, बाहर मूर्तों और तीर्थों और पिछले महात्माओं के निशानों और ग्रन्थों और मकानों और दरियाओं और कुओं पर ढूँढते हैं, वे किस क़दर भूल और भरम में पड़े हैं और उनका कभी थल बेड़ा नहीं लगेगा।।

११ - जब कि जीव का असली रूप साफ़ देह में गुप्त मालूम होता है और ईश्वर और मालिक कुल को जो सब जगह मौजूद बताते हैं, वह सरीह घट में गुप्त मालूम होता है, फिर उन लोगों की समझ और अक़ल की निसबत जो कि आप बाहर भरम रहे हैं और दूसरे जीवों को भी बाहर भरमाते हैं, सिवाय अफ़सोस के क्या कहा जावे कि ज़रा भी सोच और विचार नहीं करते और न अपनी करतूत के नफ़े और नुकसान को मुलाहिज़ा करते हैं, सिर्फ टेकियों और अंधों और नादानों की तरह पिछली चाल को चला रहे हैं। और जो कोई उनके फ़ायदे की बात सुनावे यानी राधास्वामी मत के मुवाफ़िक अंतर के भेद और असली स्वरूप का ज़िक्र करे, तो मुतलक़ तवज्जह नहीं करते बल्कि दूर भागते हैं। यह उनकी अभागता का निशान है कि नक़ल और भरम में ही पड़े रहना चाहते हैं।।

१२ - यह टेकी और संसारी लोग हरचंद ज़ाहिर में कृष्ण और राम और विष्णु और शिव और शक्ति की मूर्तों के पुजारी और भक्त नज़र आते हैं, लेकिन हक़ीक़त में उन देवताओं और औतारों के असली स्वरूप के (जो उनके घट में मौजूद है) दुश्मन हैं। क्योंकि जो कोई उसका भेद और पता और महिमा उनको सुनावे, उसको मूर्तों का निन्दक कहते हैं और उसके बचन को ज़रा भी तवज्जह करके नहीं सुनते,

बल्कि उसके साथ दुश्मनी और फ़िसाद करने को तैयार होते हैं। अब ख़्याल करो कि यह लोग ब्रह्म और उसके औतार स्वरूप और देवताओं के दुश्मन हैं कि भक्त, और इनका उद्धार किस तरह होगा ?

१३ - भागवत के एकादश स्कन्ध में साफ़ लिखा है कि सच्चे कृष्ण अपने भक्त ऊधो को बग़ैर जोग अभ्यास के परम धाम में नहीं पहुँचा सके। फिर मूर्त कृष्ण, टेकी पुजारियों को क्या दे सकता है, ख़ास कर उस हालत में कि इन लोगों को उसके असली स्वरूप से विरोध है? इस वास्ते सब मूर्ति पूजा वाले सिवाय उनके कि जो भोले और अन्तर में सच्चे हैं और असल स्वरूप से मिलने का हिरदे में शौक़ रखते हैं, चौरासी में चले जाते हैं, और नीच ऊँच देह, नीच ऊँच देश में, धारन करके, अपनी करनी का फल भोगते हैं।।

१४ - जो भोले ओर सच्चे भक्त हैं और अनजानता के सबब से मूर्ति पूज रहे हैं, उनका संयोग कुल मालिक राधास्वामी दयाल अपनी मेहर से, साथ संत सतगुरु या साध गुरु या उनके सतसंगी के साथ लगा कर, और सच्चे मार्ग और सच्चे अभ्यास का उपदेश करा कर, एक दिन अपने निज धाम में बासा देंगे।।

१५ - इस वास्ते हर एक जीव को जो अपना सच्चा उद्धार चाहे, मुनासिब और लाज़िम है कि सच्चे मालिक और उसके निज धाम का और उससे मिलने के तरीक़े का, खोज और तलाश राधास्वामी संगत में करे, तो उसको पूरा पता और भेद और चलने का तरीक़ा मालूम हो जावेगा। और फिर संत सतगुरु की मेहर और दया लेकर और सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास

करके, एक दिन निज धाम में पहुँच कर हमेशा को सुखी हो जावेगा और काल और करम के कष्ट और क्लेश और जनम मरन के चक्कर से क़तई छुटकारा हो जावेगा।।

बचन बारहवाँ

मालिक को भक्ति प्यारी है और भक्ति सतगुरु की, और किसी की भक्ति मंज़ूर नहीं है। और जीव भी भक्ति के अधिकारी हैं।।

१ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल प्रेम का भंडार हैं और जितने जीव हैं, वे सब उनकी अंस यानी किरन हैं, और वे भी प्रेम स्वरूप हैं।।

२ - प्रेम का ज़हूरा दीनता और सेवा है यानी जहाँ जिसको प्रेम है, वहाँ वह ख़ुशी के साथ सेवा और ख़िदमत करता है और दीनता यानी मुहब्बत और नियाज़मन्दी के साथ बर्तता है।।

३ - जो कि कुल मालिक प्रेम का भंडार है और कुल जीव प्रेम स्वरूप हैं, इस वास्ते प्रेम यानी मुहब्बत सब को प्यारी है, यहाँ तक कि जानवर भी चाहे खूंख़्वार और ज़हरदार होवे, मुहब्बत के ग़ुलाम हो जाते हैं यानी जो कोई उनसे प्रीति और उनकी सेवा करे, उसको वे भी प्यार करते हैं और जैसे वह नाच नचावे, नाचते हैं।।

४ - इसी तरह कुल जीवों को प्रीति प्यारी है। जो कोई उनके साथ मुहब्बत करे और उनकी और उनके क़बायल की कुछ सेवा करे, तो वह उनको निहायत प्यारा लगता है और वह भी उलट कर उससे प्रीति करते हैं और अपना यार और भेदी बना लेते हैं।।

५ - कुल काम दुनिया के मुहब्बत यानी शौक़ से किये जाते हैं। जिसको जिस काम या चीज़ में मुहब्बत है, वह उसके वास्ते मेहनत और जतन करता है और जिसमें प्यार और शौक़ नहीं है, उस तरफ़ क़दम भी नहीं उठाता और न हाथ चलाता है।।

६ - अब ख़्याल करो कि जब कि दुनिया में कोई किसी से बग़ैर मुहब्बत के नहीं मिलता और न कोई किसी की बग़ैर मुहब्बत सेवा और ख़िदमत करता है, तो कुल मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल, और भी रास्ते के पद जैसे सोहं पुरुष, अक्षर पुरुष, ओंकार पुरुष और निरंजन जोति (जिनको शिव शक्ति भी कहते हैं) बग़ैर मुहब्बत और दीनता और सेवा के कैसे मिल सकते हैं यानी बग़ैर प्रेम के उनसे हरगिज़ मेला नहीं हो सकता। क्योंकि जब कि कुल जीवों यानी अंसों को मुहब्बत प्यारी है, तो कुल मालिक और रास्ते के मुक़ामों के धनियों को भी मुहब्बत यानी प्रेम प्यारा है।।

७ - इस वास्ते जिस मत में कि मालिक की भक्ति नहीं है और न मालिक का घट में पता और भेद बताया है और न चल कर और चढ़ कर मिलने का तरीका समझाया है, वह मत ख़ाली है। उसमें कभी किसी को कुछ प्राप्ति नहीं होगी।।

८ - संत सतगुरु कुल मालिक राधास्वामी दयाल के निज पुत्र और निज प्यारे या निज मुसाहिब हैं और मालिक के हुकम से जब २ मुनासिब होता है, दुनिया में आकर सतसंग और उपदेश सुरत शब्द मार्ग का जारी फ़रमाते हैं और ख़ुद आप भक्ति भाव में बर्त कर, जीवों को भक्ति की रीति सिखाते हैं और जो २ उनका बचन माने, उनको निज घर में पहुँचाते हैं। उनका आना संसार में सिर्फ़ जीवों के उपकार और उद्धार के वास्ते होता है।।

९ - दुनिया में औतारों और देवताओं और पिछले महात्माओं और भक्तों की भक्ति जारी है और अक्सर लोग मूरत यानी स्वरूप की नक़ल बना कर या कोई निशान या ग्रन्थ और पोथी क़ायम करके पूजा करते हैं, लेकिन असल से बे-ख़बर, और न उसकी तलाश और न उससे मिलने की चाह रखते हैं। बल्कि जो कोई उनके सामने असल का भेद बयान करे, जो उससे लड़ने को तैयार होते हैं।।

१० - जो कि यह लोग अनजान और हठीले और मूर्ख टेकी हैं इस वास्ते वे संतों के उपदेश के लायक़ नहीं हैं, लेकिन जिस किसी के हिरदे में, सच्चा शौक़ सच्चे मालिक से मिलने और उसके निज धाम में बासा पाने का पैदा हुआ है, उसको संतों का सतसंग प्यारा लगेगा और वह शख़्स दीनता और सेवा और उपदेश लेकर अभ्यास करके, एक दिन संत सतगुरु की मेहर से माया के घेर से पार होकर निज धाम में बासा पावेगा।।

११ - संतों के सतसंग में प्रेमी जन जमा होते रहते हैं और वह प्रेमा-भक्ति की रीत में खुल कर बर्तते हैं और जगत के जीवों की लज्जा और शरम और ख़ौफ़ नहीं करते। इस वास्ते जो कोई सच्चा परमार्थी संतों के सतसंग में जाता है, वह प्रेमी जन के संग रल मिल कर सहज में और सुखालेपन के साथ भक्ति में शामिल होकर अपना भाग बढ़ाता है और दिन २ मेहर और दया का अधिकारी होता जाता है।

१२ - इस भक्ति से मतलब यह है कि प्रेमी के हिरदे में कुल मालिक के दर्शनों का सच्चा प्रेम और खटक पैदा होवे और वह दिन २ बढ़ती जावे। फिर यह खटक एक दिन धुर पद में पहुँचा कर छोड़ेगी।।

१३ - सच्चे मालिक के चरणों की ऐसी भक्ति और प्रेम बिना संत सतगुरु के सतसंग और मेहर और दया के, किसी के हिरदे में पैदा नहीं हो सकता। इस वास्ते कुल परमार्थियों को जो सच्चे मालिक की भक्ति करना चाहें, चाहिये कि संतों की अथवा राधास्वामी संगत की तलाश करके उसमें शामिल होवें और संत सतगुरु का दर्शन और सेवा करके अपना भाग बढ़ावें।।

१४ - राधास्वामी मत में प्रेमा भक्ति का स्वरूप इस तौर से वर्णन किया है कि प्रेमी तो भक्ति करनेवाला और उसकी बैठक जाग्रत के वक़्त नेत्रों में है और भक्ति उस धार का नाम है कि जिसकी धुन पकड़ के सुरत और मन तिल के मुक़ाम से अपने घट में, ऊँचे देश की तरफ़, चलते और चढ़ते हैं और जब चढ़ कर उस धाम में सुरत पहुँचे, जहाँ से वह आदि धारा शब्द और प्रेम और नूर की प्रकट हुई है, तब अपने भगवंत यानी

प्रीतम से मेला हो गया। इस तरह भक्त और भक्ति और भगवंत जो ज़ाहिरा जुदे मालूम होते हैं, पर अभ्यास करके एक हो जाते हैं यानी धुर पद में पहुँच कर भक्ति ख़तम हो जाती है और भक्त अपने भगवंत से मिल जाता है और उसको इख़्तियार रहता है कि चाहे जब सनमुख रह कर अपने मालिक के दर्शन का आनंद बिलास लेवे।।

१५ - अब ग़ौर करके विचारो और समझो कि इस क़िस्म की भक्ति का कहीं किसी मत में ज़िक्र तक भी नहीं है और जो कोई जो कुछ कहता है, वह विद्या और मामूली प्रीति के साथ बयान करता है। सो वह प्रीति, लोग मूर्त्तों में या ग़ायब मालिक के चरनों में ख़र्च कर रहे हैं। यह प्रीति बहुत कम बढ़ती है और बिना भेद और जुगत चलने के प्रीतम से मिला नहीं सकती।।

१६ - मूर्त्ति पूजा वालों के दिल में कभी अपने इष्ट से मिलने का ख़्याल नहीं गुज़रता क्योंकि वह मूर्त्ति को ही असल समझते हैं और जो कोई असल का भेद सुनावे, तो उससे विरोध करते हैं। फिर यह भक्ति मौत के वक़्त और मरने के बाद क्या काम दे सकती है ?

१७ - मूर्त्ति या ग्रन्थ या निशान में चैतन्य गुप्त है और वहाँ कभी प्रकट होकर बोल नहीं सकता, लेकिन संत सतगुरु में महा निर्मल चैतन्य, जैसे सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल, और भी माया से मिला हुआ चैतन्य, जैसे ब्रह्म और पारब्रह्म और आत्मा परमात्मा प्रकट हैं और उनका दर्शन सत्तपुरुष राधास्वामी के बराबर है, उनके सन्मुख जो कोई कुछ अर्ज़ करना चाहे, तो उसकी अरज़ी की ख़बर जैसा मौक़ा होवे, ब्रह्म पारब्रह्म

पद और सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँच सकती है।

१८ - जो बंसावली गुरू या भेष या पंडित या विद्यावान हैं, यह कुल मालिक के भेद से बे-ख़बर हैं और उनके मत में चलना और चढ़ना बिल्कुल नहीं है, क्योंकि जब यह ब्रह्म को सर्वत्र व्यापक मानते हैं, तो फिर उस से मिलने के वास्ते आना जाना या चलना चढ़ना नहीं मानते।।

१९ - लेकिन असल में कुल मालिक एक-देशी भी है और सर्व-देशी भी। इस वास्ते जब तक कोई जतन चलने और चढ़ने का नहीं करेगा, तब तक सर्व-देशी मुक़ाम से हट कर, एक-देशी मुक़ाम में, जहाँ कुल मालिक राधास्वामी दयाल, महा निर्मल चैतन्य स्वरूप, बिराजते हैं, नहीं पहुँचेगा और इस वास्ते उसका माया के घेर से छुटकारा भी नहीं हो सकता है और न जनम मरन का चक्कर बंद होवेगा।।

२० - इस वास्ते कुल मालिक राधास्वामी दयाल को भक्ति और प्रेम प्यारा है और भक्ति और प्रेम जो संत सतगुरु के चरनों में किया जावे, वह मंज़ूर है। और किसी की भक्ति मंज़ूर नहीं है, क्योंकि उसका सिलसिला कुल मालिक के चरनों से लगा हुआ नहीं है और इस सबब से वहाँ से उसका फल नहीं मिल सकता है और न भक्ति करने वाले को कभी दर्शन असली स्वरूप का नक़ली स्वरूप में या अपने घट में मिल सकता है। अलबत्ता शुभ कर्म का फल, कुछ सुख मिल जावेगा।।

२१ - संतों और भी और महात्माओं का क़ौल है कि सच्चे मालिक के दरबार में सिर्फ़ प्रेमी जन यानी

आशिक़ दख़ल पावेंगे और वे ही सन्मुख रह कर दर्शनों का आनन्द लेवेंगे। और जितने जीव तरह २ से परमार्थ कमाते हैं, उनको विशेष करके शुभ कर्म का फल यानी कोई दिन के वास्ते सुख मिलेगा, क्योंकि इनके मन में दर्शनों की चाह नहीं होती और न संत सतगुरु से मिलना चाहते हैं, इस वास्ते महल में दख़ल नहीं पा सकते।।

२२ - जो सच्चे और पूरे आशिक़ और प्रेमी जन हैं, वे कोई ख़ास दर्जा तै कर के, आप सच्चे मालिक के माशूक़ हो जाते हैं यानी सच्चे मालिक को ऐसे प्यारे लगते हैं कि वह अपने से उनको किसी वक़्त जुदा करना नहीं चाहता और जो वे कहें या चाहें वही मालिक को भी मंज़ूर होता है यानी उनकी और मालिक की मौज एक हो जाती है। यह लोग सच्चे मालिक के महा प्यारे यानी महबूबे-इलाही कहलाते हैं और संत और परम संत गति भी उन्हीं को मिलती है। यह सबसे बड़ा दर्जा भक्ति का है और किसी महा बड़भागी को, जिसके मन में सिवाय मालिक के दर्शनों के, और कोई चाह किसी क़िस्म की नहीं रही है, मिलता है।।

बचन तेरहवाँ

सतसंगियों को सेवा के मुआमले में आपस में क्रोध करना नहीं चाहिए, क्योंकि क्रोध काल का चक्कर है। इस वास्ते क्षमा के साथ उसका हटाना मुनासिब है और

सतसंग में बचन चित दे कर सुनना और समझना और उनके मुआफ़िक़ कार्रवाई करना मुनासिब है, ताकि मन की हालत बदलती जावे और मैलाई कट कर सफ़ाई हासिल होती जावे।।

१ - सतसंग में काल अपना दख़ल नहीं कर सकता, लेकिन सेवा में सेवकों के मन को फेरफार कर क्रोध और विरोध और ईर्षा पैदा करता है।।

२ - जैसे एक शख़्स ने कोई ख़ास सेवा शुरू की, जो कोई दूसरे ने बग़ैर उसकी इजाज़त के वह सेवा कर दी, तो जिस शख़्स की वह सेवा है, उसके दिल पर यह बात निहायत सख़्त गुज़रती है और वह अपने तईं समझता है कि मैं आज ख़ाली रह गया, क्योंकि उस सेवा में उसकी गहरी आशक्ति थी, इस सबब से वह नये सेवा करने वाले से नाराज़ होता है कि बग़ैर इजाज़त के उसने कैसे वह सेवा करली।।

३ - मालूम होवे कि सतसंग में चन्द क़िस्म की सेवा होती हैं और वह सतसंगी और सतसंगिनें अपने उमंग के साथ करते हैं। जिसने जो सेवा इख़्तियार की, उसको उसी का आधार हो जाता है और वह वक़्त मुअइयना[१] पर हाज़िर होकर अपनी सेवा को उमंग के साथ अंजाम देता है।।

४ - जो कोई शख़्स पुराने या नये सतसंगियों में से किसी की सेवा में दख़ल देता है, वह बेजा दस्त-अंदाज़ी

१ - नियत समय पर।

समझी जाती है और जिसकी सेवा में ख़लल पड़े, वह सच्चे मन से ख़लल डालने वाले पर नाराज़ होता है और आइन्दा को उसको होशियार करता है कि फिर किसी के साथ ऐसी हरकत बेजा न करे।।

५ - सतसंग में सेवा ऐसे ही तक़सीम हो जाती हैं, जैसे कि कचहरी दरबार में जुदा २ काम अहलकारों के मुताल्लिक़ होता है।।

६ - संत सतगुरु सेवा आप तक़सीम नहीं करते। जो सतसंगी जिस काम को उमंग के साथ अंजाम देना शुरू करे, वह उसी की सेवा समझी जाती है और वह उसको रोज़मर्रा बिला नाग़ा वक़्त-मुक़र्ररा पर अंजाम देता है, बल्कि बीमारी की हालत में भी जहाँ तक मुमकिन होवे, अपनी सेवा अपने ही हाथ से करता है।

७ - इस सूरत में सेवा वाले का अपनी सेवा छिन जाने पर, चाहे एक ही बार के वास्ते होवे, नाराज़ होना और दिल में रंज मानना सही मालूम होता है। पर संत सतगुरु फ़रमाते हैं कि सतसंगी को हर वक़्त क्षमा रखना चाहिये और जब क्रोध या विरोध मन में आवे, तो उसको काल का चक्कर समझ कर, जहाँ तक मुमकिन होवे, हटाना चाहिये यानी जिस सतसंगी ने जान बूझ कर, या अनजानता के साथ उसकी सेवा एक बार लेली है, तो उसको धीरज के साथ फ़हमायश करना मुनासिब है कि जिसमें फिर बिला इजाज़त वह ऐसी हरकत न करे, लेकिन जब कोई दीनता के साथ कोई सेवा एक वक़्त के वास्ते माँगे, तो भी सतसंगी को दया करके और माँगने वाले का भाग बढ़ाने के वास्ते ख़ुशी के साथ अपनी सेवा उसके हाथ से करा देना चाहिये।

इसमें परस्पर प्रीति बढ़ेगी और क्रोध और विरोध पैदा नहीं होगा।।

८ - क्रोध और विरोध बे-शक़ काल का चक्कर है। इस से सतसंग में झगड़ा और आपस में विपरीत फैलती है। जो यह कैफ़ियत ज़्यादा बढ़े तो फ़िसाद की शकल पैदा करती है और यह सतसंगी के वास्ते निहायत शर्म की बात है।।

९ - इस वास्ते संत सतगुरु बारम्बार फ़रमाते हैं कि क्रोध विरोध और ईर्षा से बच कर, अपनी परमार्थी कार्रवाई करना चाहिये और जब कभी कोई किसी मुआमले में हठ ज़बर करे या दीनता के साथ माँगे, तो उसकी हठ पूरी करनी चाहिये और पीछे उसको समझा देना मुनासिब है कि जिस में आइन्दा इस क़िस्म की हठ बे मौक़े न करे। और जो सेवा का शौक़ीन है, तो कोई सेवा जो ख़ास तौर पर कोई न करता होवे, या अब तक वह ख़ास सेवा जारी न हुई होवे, उसको अपने तौर से उमंग और प्रेम के साथ करे, ताकि दूसरे की सेवा छीनी न जावे और क्रोध या विरोध पैदा न होवे।

१० - सतसंग में सतसंगियों को इस बात का बड़ा लिहाज़ और ख़्याल रखना चाहिये कि आपस में क्रोध और विरोध या ईर्षा पैदा न होवे, नहीं तो सतगुरु को भी तकलीफ़ होगी और क्रोधी विरोधी आप भी तकलीफ़ पावेगा। और दूसरे को भी तक़लीफ़ देगा। यह हालत और चाल दुनियादारों की है कि ज़रा सी बात पर बिगड़ कर, लड़ाई और फ़िसाद को तैयार हो जाते हैं। जो सतसंगी का भी ऐसा ही हाल रहा, तो जानना

चाहिये कि अभी तक सतसंग के बचनों का असर उसके दिल पर कुछ नहीं हुआ और वह शख़्स क़ाबिल संतसंग के नहीं है, लेकिन संत सतगुरू दया करके ऐसे जीवों को बिल्कुल हटाते नहीं हैं, इस उम्मीद पर कि दो चार मर्तबे झिड़की और ताड़ मार सह कर, उसका मन बदल कर दुरुस्त हो जावेगा।।

११ - कोई जीव कैसा ही मैला और नाक़िस तबीअत होवे, उसकी सफ़ाई और गढ़त सिर्फ़ सतसंग में मुमकिन है। और किसी जगह कोई गढ़ा नहीं जावेगा, बल्कि ज़्यादा मैला होगा। इस वास्ते किसी जीव को जहाँ तक मुमकिन होवे, सतसंग से हटाना नहीं चाहिये, बल्कि जिस किसी की दुरुस्ती मंज़ूर होवे और वह चाहे कैसा ही बद-चलन होवे, वह सच्चे सतसंग में शामिल होने से एक दिन गढ़ जावेगा और उसकी समझ और रहनी बदल जावेगी।।

१२ - सतसंग किसको कहते हैं, यह भी अच्छी तरह समझ लेना चाहिये, ताकि धोखा न रहे। सतसंग संत सतगुरु के संग का नाम है और उसमें सिर्फ़ सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम और नाम की महिमा गाई जाती है और प्रेम के बढ़ाने की जुगत और रास्ता तै करने का तरीक़ा और नाम और भेद, मंजिलों और रास्ते का, वर्णन किया जाता है और दुनिया और उसके सामान वग़ैरा की नाशमानता और उसके धोखे का स्थान होना, खोल कर समझाया जाता है।।

१३ - जो कोई ऐसा सतसंग होशियारी के साथ करेगा और फिर बचनों को विचारेगा तो ज़रूर उसके

मन की हालत थोड़ी बहुत बदलेगी और सच्चे मालिक का थोड़ा बहुत प्रेम हिरदे में आवेगा और संत सतगुरु के चरनों में प्रीति और प्रतीत उसकी बढ़ती जावेगी।

१४ - ख़ुलासा यह कि सतसंगी का स्वभाव और रहनी सतसंग और अभ्यास करके बदलेंगे और जब दूसरे सतसंगियों की चाल ढाल और रहनी देखेगा, तब सच्चा पछतावा मन में ला कर नाक़िस स्वभाव और आदत को आपही आहिस्ते २ छोड़ता जावेगा और संत सतगुरु और शब्द और सतसंग और प्रेमी जन प्यारे लगेंगे और उनमें दिन २ प्यार और भाव बढ़ता जावेगा।।

१५ - दुनिया में बड़ी कसर सच्चे सतसंग की हो रही है और इसी सबब से जीवों की हालत नहीं बदलती। जो सतसंग कि और मतों में जारी है, उसमें विशेष करके तवारीख़ी हालात और क़िस्से और क़ज़िये और लड़ाई झगड़े वग़ैरा और कभी २ कुछ मन के ताड़ मार वग़ैरा का बयान होता है। इन बातों से मालिक के चरनों में प्रीति और प्रतीत नहीं बढ़ती।।

१६ - सच्चा और पूरा सतसंग उसी का नाम है, जहाँ संत सतगुरु या साध गुरु बिराजते हैं और जो अपने मन और इन्द्रियों को क़ाबू में लाकर सर्व अंग करके अपने मालिक के चरनों के प्रेम में मस्त और मगन रहते हैं और जो कोई सच्चा परमार्थी उनके चरनों में आवे, उसको भी दया करके प्रेमी बना देते हैं। फिर जो कोई उनके सतसंग में जावेगा, अगर सच्चा परमार्थी है, तो ज़रूर संत सतगुरु और प्रेमी जन का दर्शन करके और उनकी रहनी और हालत देख कर, आप भी प्रेमी होता जावेगा और जिस क़दर चरनों का

प्रेम हिरदे में बसता जावेगा, उसी क़दर खोटे स्वभाव और विकारी अंग दूर होते जावेंगे और एक दिन पूरी सफ़ाई होकर सत्तलोक में बासा पावेगा।।

बचन चौदहवाँ

परमार्थ की चाह मुवाफ़िक़ दुनिया की चाह के, ज़बर होना चाहिये, तब कुछ फ़ायदा हासिल होगा और जो दुनिया और उसके भोग विशेष प्यारे लगे, तो फिर जीव का गुज़ारा कैसे होवे? अव्वल तो जीव संतों के सतसंग का अधिकार नहीं रखता। कुछ अर्से तक हाज़िर होवे तब बचन समझे और फिर कुछ अर्सा चाहिये कि उसका बर्तावा बचन के मुवाफ़िक़ दुरुस्त होवे।।

१ - इस दुनिया में स्वार्थ यानी दुनिया की कार्रवाई मुक़द्दम और ज़्यादातर अज़ीज़ समझी जाती है और परमार्थ जिसकी असल में ख़ास ज़रूरत है, बहुत ज़रूरी नहीं समझा जाता यानी उसकी कार्रवाई का फ़िक्र जीवों को बहुत कम है।।

२ - बहुत से जीव इस जमा़ने में परमार्थ की कुछ ज़रूरत नहीं समझते और इस वास्ते कोई कार्रवाई किसी क़िस्म की, परमार्थी ज़ैल में, इरादतन् नहीं करते।।

३ - बाज़े कर्म और तीर्थ व्रत मूर्ति पूजा वग़ैरा या पोथी का पाठ और माला फेरना, जैसा कि आम लोगों को करते देखते हैं, बिला तहक़ीक़ करने, उसके मतलब और फ़ायदे और तरीक़े कार्रवाई के, जैसा कुछ उनसे बन आवे, करने लगते हैं और अपने मन में अहंकार इस बात का रखते हैं कि हम ऐसे और वैसे पूजाधारी हैं।।

४ - बाज़ों ने जो थोड़ी विद्या पढ़ी और वेदान्त के ख़ुलासा ग्रन्थ देख कर अपने तईं ब्रह्म मान लिया और भक्ति और पूजा असल ब्रह्म पद और औतारों की उड़ा दी और कोई अभ्यास किसी क़िस्म का, वास्ते सफ़ाई अन्दरूनी और चढ़ाई मन और सुरत के किया नहीं, सो इन जीवों का घाट नहीं बदला यानी मन और इन्द्रियों ही के मुक़ाम पर, जैसे संसार में बर्त रहे थे, थोड़ा बहुत वैसा ही बर्तावा जारी रहा।।

५ - थोड़े जीव जो सच्चे दर्दी और खोजी सच्चे परमार्थ के थे, वह तलाश और तहक़ीक़ात करते हुए, कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया से, संतों के सतसंग यानी राधास्वामी संगत में पहुँचे और वहाँ पता और भेद सच्चे मालिक और उसके धाम का और हाल रास्ते और मंज़िलों का और तरीक़ा चलने और चढ़ने का घट में मालूम करके बहुत ख़ुश हुये और उपदेश लेकर अभ्यास में लग गये।।

६ - इन जीवों को संत सतगुरु के बचन सुन कर दरियाफ़्त हुआ कि जब तक परमार्थ यानी सच्चे मालिक से मिलने की चाह, कुल संसारी कामों से किसी क़दर ज़बर न होगी, तब तक परमार्थी फ़ायदा और आनन्द,

जैसा चाहिये वैसा, घट में नहीं मिलेगा और न जल्दी तरक़्क़ी होगी।।

७ - इस में कुछ शक़ नहीं कि जो कोई जिस क़दर लगन लेकर परमार्थ में लगेगा, उसको उसी क़दर फ़ायदा हासिल होवेगा और उसी मुवाफ़िक़ तरक़्क़ी भी होती जावेगी, लेकिन जो कोई अपना काम जल्द और पूरा बनाना चाहता है, उसको अलबत्ता सब से बढ़ के अनुराग और बैराग और सतसंग और सेवा मेहनत अभ्यास वग़ैरा की करनी पड़ेगी।

८ - राधास्वामी मत में घरबार या रोज़गार नहीं छुड़ाया जाता है, लेकिन गुरुमुखता की प्राप्ति के वास्ते सब को बराबर हिदायत की जाती है और गुरुमुखता से मतलब यही है कि धुर धाम में पहुँच कर, मालिक से मिलने की चाह, और सब चाहों से, ज़बर होवे और यह बात, अगर शौक़ तेज़ है, तो गृहस्थ में बैठे, संत सतगुरु और कुल मालिक की दया से हासिल हो सकती है।।

९ - मालूम होवे कि सिवाय अधिकारी के यानी सच्चे खोजी और दर्दी परमार्थी के, और कोई जीव संतों के सतसंग के लायक़ नहीं है, क्योंकि जब तक दुनिया और उसके भोग बिलास विशेष प्यारे लगते हैं, तब तक संतों के बचन, संसार की तरफ़ से बैराग और चरनों में अनुराग के, अच्छे नहीं मालूम पड़ेंगे और न मन उनके बार २ सुनने का यानी सतसंग में हाज़िर होने का इरादा करेगा और न ऐसे जीवों से सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास बन पड़ेगा।

१० - जो कोई जीव मौज से सतसंग में आ जावे और ठहरा रहे, जो अलबत्ता बार २ सतसंग के बचन सुन कर, उसके मन की हालत किसी क़दर बदलनी मुमकिन है यानी उस में मालिक के चरनों का अनुराग और दुनिया की तरफ़ से बैराग थोड़ा २ पैदा होता जावेगा और प्रेमी जन की विरह और प्रेम की हालत देख कर मदद मिलती जावेगी यानी कोई दिन में यह जीव भी सच्चे प्रेमियों के ज़ैल में दाखिल हो जावेगा और एक दो जनम की देर अबेर से अपना काम पूरा बनवा लेगा।।

११ - संतों के सतसंग की महिमा बहुत भारी है। जिन बातों का वहाँ निर्णय होता है और जो भेद कि वहाँ प्रकट किया जाता है, उसका ज़िक्र या बयान किसी मत में, जो दुनिया में आज कल जारी हैं, पाया नहीं जाता और इसी सबब से वहाँ जीव का पूरा और सच्चा उद्धार भी मुमकिन नहीं है।।

१२ - लेकिन जगत के जीवों ने और उनके साथ पंडित और भेष ने, जो परमार्थ में गुरु और पेशवा बन रहे हैं, संतों के सतसंग की क़दर न जानी और बजाय उमंग और दीनता के साथ शामिल होने के, अपनी नादानी से उलटी निन्दा करते हैं और जीवों को वहाँ जाने से अनेक तरह के डर दिखा कर रोकते हैं।।

१३ - सबब इसका यही है कि इन सब के मनों में संसार और धन और मान बड़ाई की क़दर सब से ज़बर धरी हुई है और परमार्थ को अपने रोज़गार और मान बड़ाई का एक वसीला समझ कर, ऊपरी तौर पर उसकी कार्रवाई ऐसी तरकीब से कि जिस में दुनियादार

राज़ी रहें, करते हैं और मालिक की रज़ामन्दी या नाराज़गी का ज़रा भी खौफ़ या ख़्याल उनके दिल में नहीं आता, बल्कि मालिक की मौजूदगी में भी उनके मन में शक़ और शुबहा बना रहता है।।

१४ - फिर ख़्याल करो कि ऐसे जीवों से या उनके ग़ोल और फ़िरकों से, क्या कार्रवाई, सच्चे परमार्थ की, बननी मुमकिन है और संतों के सतसंग की उन में लियाक़त कहाँ है, बल्कि संतों के सतसंग का हाल सुनने का भी अधिकार नहीं रखते ?

१५ - अब सब को मालूम होवे कि ब्रह्मा विष्णु महादेव और शक्ति और ईश्वर और परमेश्वर की यह ताक़त नहीं है कि जीव को चौरासी से बचा लेवें। यह शक्ति सिर्फ़ संतों को हासिल है। इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि तलाश और खोज करके संत सतगुरु के सतसंग में (जो कुल मालिक राधास्वामी दयाल के निज पुत्र और प्यारे मुसाहब हैं) हाज़िर होकर और कोई दिन उनका सतसंग और सेवा करके, अपना भाग बढ़ावें और उपदेश लेकर सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास शुरू करें, ताकि एक दिन कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया से निज धाम में बासा पावें और जनम-मरन के चक्कर से क़तई बचाव हो जावे।।

* * * * * *

बचन पन्द्रहवाँ

सच्चा परमार्थी गुरु के बचन के मुवाफ़िक़ बर्ताव करेगा और मन को रोक और टोक लगावेगा, लेकिन और लोग मन के कहने में चलेंगे और धोखा खावेंगे।।

गुरुमुख अंग का वर्णन

१ - जिसके सच्चा खोज और सच्चा दर्द परमार्थ का है, वह संत सतगुरु और उनकी संगत का पता लगा कर उसमें शामिल होगा, क्योंकि बग़ैर संत अथवा राधास्वामी मत के, उसको कहीं और किसी तरह से शान्ति नहीं आवेगी।।

२ - जब कोई दिन होशियारी के साथ सतसंग करेगा और बचन सुन कर विचारेगा और उनके मुवाफ़िक़ अपनी रहनी और बर्ताव दुरुस्त करना चाहेगा, तब उसको महिमा सतगुरु और सतसंग की कुछ मालूम पड़ेगी और इतने ही में बहुत हालत और समझ बूझ अपनी बदलती हुई नज़र आवेगी।।

३ - जिस वक़्त सतगुरु मेहर और दया से सुरत शब्द मार्ग का उपदेश फ़रमावें, तब शौक़ के साथ अंतर अभ्यास में लग कर कुछ रस और आनन्द मिलेगा और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया, अंतर और बाहर, परखने में आवेगी तब प्रतीत और प्रीति चरनों में बढ़ेगी, और सेवा उमंग के साथ संत सतगुरु और प्रेमी जन की करना शुरू करेगा।

४ - फिर सब तरह से अंतर और बाहर परचे पा कर सतगुरु की गहरी प्रीति और प्रतीत मन में आवेगी और हर बात में उनकी मौज को मुक़द्दम रक्खेगा और जहाँ तक मुमकिन होगा अपनी कार्रवाई परमार्थी और संसारी, सतगुरु के बचन और आज्ञा के मुवाफ़िक़ दुरुस्त करेगा, ताकि तरक़्क़ी में किसी तरह का हर्ज न पड़े।।

५ - सिवाय इसके सच्चा परमार्थी अपने मन और इन्द्रियों की चाल को निरखता और परखता चलेगा और जहाँ तक मुमकिन होगा सतसंग और दया का बल लेकर, उनको नीचा रक्खेगा और ज़ोर पकड़ने नहीं देगा।

६ - गृहस्थ में रह कर यह ज़रूर नहीं है कि मन और इन्द्रियों के साथ क़तई लड़ाई पैदा करनी और उन को किसी क़िस्म का भोग बिल्कुल न देना। इस में काम दुरुस्ती से जल्द नहीं बनेगा और ऐसा शख़्स हमेशा मन के हाथ से झटके और धोखे सहता रहेगा।।

७ - विचारवान और समझदार परमार्थी को इस क़दर अहतियात मुनासिब है कि किसी भोग की आप इच्छा न उठावे और जो भोग कि अनिच्छित या परिच्छित प्राप्त होवें, उनमें अहतियात के साथ बर्ताव करे।।

८ - अनिच्छित भोग वह हैं कि जो बग़ैर इसकी चाह उठाने के प्राप्त होवें और परिच्छित भोग वह हैं कि जो दूसरा शख़्स अपनी ख़ुशी से लेकर या ख़रीद करके पेश करे और इस बात की दरख़्वास्त करे कि

उसकी ख़ातिर थोड़ा बहुत वह भोग काम में लाया जावे।।

९ - मन जन्मानजन्म का भूला हुआ और संसार में भरमा हुआ है और अनेक तरह के भोगों में ग्रसा हुआ है। यकायक यह भोगों को नहीं छोड़ सकता और न उन की चाह उठाने से बाज़ रह सकता है, लेकिन सच्चा परमार्थी सतसंग और भक्ति और संत सतगुरु की मेहर और दया का बल लेकर इस मन को किसी क़दर ढीला डाल सकता है और दुनिया का हाल इसको अच्छी तरह से दिखला कर और उसका नतीजा समझा कर, उसकी तरफ़ से किसी क़दर बैराग और उदासीनता चित्त में पैदा कर सकता है और उधर संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में विशेष अनुराग जगा सकता है और इस तरह रफ़्ते २ एक दिन मन को क़ाबू में ला सकता है क्योंकि जब मन में थोड़ा बहुत प्रेम आया और अभ्यास में ऊँचे देश का रस मिला, तो वह आपही संसार की तरफ़ से हट कर, सच्चे परमार्थ में ज़ौक़ और शौक़ के साथ लगेगा और दिन २ तरक़्क़ी हासिल करेगा और संसार और उसके सामान और भी कुटुम्ब परिवार और धन और माल वग़ैरा की क़दर और महिमा उसके चित्त में घटती जावेगी।

१० - मालूम होवे कि संसारी भोग और बिलास और माया के रचे हुये पदार्थ, ऊँचे और नीचे देश के सुरत और मन के साथ, वक़्त चढ़ाई के ऊँचे देश में, चल नहीं सकते और न उस देश में उन पदार्थों की कुछ जरूरत सुरत को पड़ती है। फिर उन पदार्थों में

सिवाय ज़रूरत के मुवाफ़िक़ बंधनों का होना ना-मुनासिब और सुरत और मन की चढ़ाई में विघ्नकारक है।।

११ - जहाँ कुल मालिक का धाम है, वहाँ कोई पदार्थ या वस्तु जो कि रचे गये हैं, पहुँच नहीं सकते और न वहाँ ठहर सकते हैं। इस वास्ते सच्चे परमार्थी को, जिस क़दर अपनी प्रीति राधास्वामी दयाल के चरनों में बढ़ाता जावे, रचना और उसके सामान से, चाहे किसी मंडल और देश में होवे, अंतर में हटना और न्यारे होना ज़रूर और मुनासिब है, नहीं तो उसकी चाल नादानों के मुवाफ़िक़ बहुत सुस्त चलेगी और रास्ते में झकोले खाता जावेगा।।

मनमुख अंग का वर्णन

१२ - जो लोग कि संतों के सतसंग में इत्तिफ़ाक़ से शामिल हो गये हैं, लेकिन अभी उनको दुनिया के भोग बिलास प्यारे लगते हैं और उन्हीं की तरक़्क़ी की चाह उठाते रहते हैं और उस चाह के पूरा करने के निमित्त अनेक तरह के जतन करते रहते हैं, उनकी नज़र और तवज्जह हमेशा मन और माया की तरफ़ ज़बर रहेगी और परमार्थ की तरफ़ निबल। इस वास्ते उनकी कार्रवाई को मनमुखता के नाम से वर्णन किया जाता है।

१३ - यह लोग दुनिया के बहुत ज़बर भोग मिलने के वक़्त परमार्थ को आसानी से ढीला डाल देंगे या छोड़ देंगे।।

१४ - परमार्थ के रस और आनन्द की प्राप्ति के लिए उनसे मेहनत बहुत कम बल्कि नहीं हो सकेगी।

मन और इन्द्रियों की दुरुस्ती और गढ़त और परमार्थ की तरक़्क़ी की प्राप्ति के वास्ते सतगुरु और सतसंग के बचन उन लोगों से बहुत कम यानी ज्यों के त्यों नहीं माने जावेंगे और जो ज़्यादा ज़ोर दिया जावेगा, तो सतसंग छोड़ कर चले जावेंगे और अजब नहीं कि सतसंग की निन्दा करें।।

१५ - जो भक्ति के अंग और प्रेम की रीति संसारियों को अच्छी नहीं लगती है, उसमें यह लोग कम बरतेंगे और संसारियों में उस चाल को निन्दा के तौर पर कहेंगे।।

१६ - ख़ुलासा यह है कि इन लोगों के मन में संसार और उसके सामान और उसके रस्म और क़ायदे की महिमा ज़बर रहेगी और उसको छोड़ने में जान सी निकलती मालूम होवेगी। लेकिन जो कुछ अर्से तक यह लोग सतसंग में पड़े रहे, तो आहिस्ते २ संत सतगुरु अपनी मेहर और दया से इनके मन की भी गढ़त कर लेंगे और चरनों का थोड़ा बहुत प्रेम बख़्श कर प्रेमियों के सतसंग में लगा देंगे।

१७ - जो संसारी या मनमुख जीव संतों के सतसंग में नहीं आवेंगे और न कभी संतों के प्रेमी सतसंगी से उनका मेल होगा, तो वे चौरासी के चक्कर में भरमते रहेंगे और बारम्बार देह धर कर दुख सुख का भोग करते रहेंगे और जनम मरन के चक्कर का कष्ट और क्लेश सहते रहेंगे।

१८ - दुनिया में जो कुछ बाहरमुख कार्रवाई, अनेक मतों की जारी है, वह शुभ कर्म में दाख़िल है और मन और इन्द्रियों की गढ़त उसमें नहीं है। बल्कि इनको

और ताक़त मिलती है और बाहरमुख बिलास का शौक़ बढ़ता जाता है। फिर संसारी जीव ऐसी हालत में, सच्चे परमार्थ के, जो कि सिर्फ संतों के सतसंग में जारी है, कमाने के लायक़ कैसे हो सकते हैं ?

१९ - बाज़े जीव जो अंतरमुख कार्रवाई करते हैं, उनका अभ्यास नाभि या हिरदे में होता है या त्रिकुटी में, मगर मंज़िल और रास्ते के हाल से बिल्कुल बे-ख़बर हैं और जो अभ्यास करते हैं, उसमें भी चढ़ाई का फ़ायदा बिल्कुल नहीं है और बहुतेरे तो आँख बन्द करके या खुली रख कर, ध्यान बिल्कुल बे ठिकाने करते हैं, सो उसमें सिमटाव का भी फ़ायदा बहुत कम है और अहंकार इन लोगों को अपनी करनी का बहुत ज़्यादा होता है और समझते हैं कि जो कुछ जानना था, वह हमने जान लिया और जो कुछ करना था, वह सब कर चुके।।

२० - जो कोई इन लोगों को संत मत या ऊँचे मुक़ाम का ज़िक्र सुनावे, तो बिल्कुल तवज्जह नहीं करते और संतों के बचन में भाव और प्रतीत नहीं लाते।।

२१ - यही हाल इनके गुरुओं का है, जो कि निपट संसारी हैं और संसार ही की तरक़्क़ी चाहते हैं। यह लोग संतों से बजाय प्रीति के दुश्मनी करते हैं और झूठी बुराइयाँ करके किसी जीव को संतों के सतसंग में जाने नहीं देते, क्योंकि वे समझते हैं कि जो जीव संतों के सतसंग में कसरत से जावेंगे, तो उनकी मान बड़ाई और आमदनी में ख़लल पड़ेगा और उनका पाखंड और कपट खुल जावेगा।।

२२ - यह लोग निपट दुनियादारों के वास्ते बनाये गये हैं और इस वास्ते संसार में इनका रखना ज़रूर और मुनासिब है, ताकि दुनियादारों से कुछ तन मन धन की सेवा करावें और मनमुखों को संतों के सतसंग में न जाने देवें कि जिससे वहाँ का निर्मल परमार्थ गदला न होवे।।

बचन सोलहवाँ

जो कोई सचौटी के साथ सतसंग करेगा, उसकी हालत ज़रूर बदलेगी और सब बासना उसकी रफ़्ते २ पूरी या दूर हो जावेंगी। और जो कि बचन चित्त देकर नहीं सुनते या उनके मानने का इरादा नहीं करते, वे कोरे रहेंगे, चाहे उमर भर सतसंग करें, क्योंकि सुनना और समझना आसान है, मगर उसके मुवाफ़िक़ बर्ताव किये बग़ैर कुछ फ़ायदा हासिल नहीं हो सकता।।

१ - जिस किसी को सच्चा दर्द परमार्थ का है और सच्चा फ़िक्र अपने जीव के कल्याण का पैदा हुआ है, वह तलाश करके संतों के सतसंग में जावेगा और उनका दर्शन और बचन चित्त देकर करेगा और सुनेगा और जो बचन कि मानने चाहिये, उनको उमंग के साथ मानने का इरादा करेगा।

२ - इस तरह रोज़ाना सतसंग करके, सच्चे परमार्थी की प्रीति फ़िजूल चीज़ों और आदमियों और भी जगत में घटती जावेगी और संत सतगुरु और प्रेमी जन और भी कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में बढ़ती जावेगी।।

३ - जब उपदेश, सुरत शब्द मार्ग का, लेकर अंतर अभ्यास शुरू किया जावेगा, तब कुछ रस और आनन्द अंतरी मिलेगा और कुछ मालिक की दया और क़ुदरत नज़र पड़ेगी और प्रीति और प्रतीत ज़्यादा बढ़ेगी और उसी क़दर संसार और उसके भोग बिलास की तरफ़ से चित्त उदासीन होता जावेगा।।

४ - यह निशान हालत बदलने का है और यही सतसंग के असर होने का सबूत है और सच्चे मत की भी यही पहिचान है कि संसार और उसके भोग बिलास में, जो सब जीव फँसे हुये हैं, उनसे आहिस्ते आहिस्ते न्यारा होता जावे और संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में अंतर और बाहर प्रीति और प्रतीत बढ़ती जावे।।

५ - सच्चा परमार्थी, संसारी चाहें, सिवाय उनके कि जो ज़रूरी हैं, आहिस्ते २ अपने अंतर में काटता जावेगा और जो सतगुरु अपनी मौज से कोई चाह पूरी करें, तो उसमें मुनासिब तौर पर बर्ताव करेगा और अटकेगा नहीं, क्योंकि जिस क़दर जिसकी सुरत और मन ऊँचे देश में चढ़ेंगे, उसी क़दर नीचे देश के भोग उसको रूखे फीके मालूम पड़ेंगे।।

६ - जिनके मन में सच्ची लाग परमार्थ की नहीं है, पर कुछ महिमा सुन कर या किसी रिश्तेदार या दोस्त

सतसंगी का संग करके, सतसंग में शामिल हो गये हैं, तो वह भक्ति के ज़ाहिरी अंगों में सबके साथ शामिल होकर दुरुस्त बर्तेंगे, लेकिन बचनों को जैसा चाहिये, होशियारी के साथ नहीं सुनेंगे और न उनके मानने का यानी उनके मुवाफ़िक़ अपना बर्ताव दुरुस्त करने का इरादा करेंगे।।

७ - सच्चा परमार्थी जिसने मत को अच्छी तरह समझ लिया है, संसारियों से नहीं डरेगा और न उनकी शर्म करेगा लेकिन इस क़िस्म के जीव जिनका ज़िक्र ऊपर हुआ, निन्दकों और जगत के जीवों से बहुत डरेंगे और जो वह ज़्यादा ज़ोर डालेंगे जो शायद सतसंग भी छोड़ देंगे।।

८ - इन जीवों का अगर भाग से सतसंग में कोई दिन ठहरना हो जावे, तो रफ़्ते २ सच्चे परमार्थियों के वसीले से, सच्चा परमार्थ उनके अंतर में भी थोड़ा बहुत धसाया जावेगा और फिर उनकी भी हालत बचन सुन कर और अंतर अभ्यास करके कुछ २ बदलने लगेगी और फिर उनको थोड़ी बहुत महिमा सतसंग और संत सतगुरु की मालूम पड़ेगी और उसी क़दर भाव बढ़ता जावेगा।।

९ - सतसंग की महिमा बहुत भारी है। जो सच्चा होकर इसमें लगा, वह कंचन हो गया, जैसे लोहा पारस से मिल कर कंचन हो जाता है, यानी उसके सब संसारी स्वभाव बदल कर परमार्थी हो जाते हैं।।

१० - जो बे-परवाही के साथ सतसंग करता रहा, तो वह जैसा संसारी अंग और स्वभाव लेकर आया है, वैसा ही बना रहेगा, चाहे बरसों सतसंग में पड़ा रहे,

क्योंकि उसके मन में इरादा बचन के मानने का नहीं है और न अपनी हालत बदलवाना चाहता है। ऐसे जीव सतसंग की, बजाय नेकनामी के, बदनामी कराते हैं।।

११ - मनुष्य के संग की ऐसी महिमा है कि बहुत से जानवरों को वह सिखा कर, उनसे तरह २ के काम कराता है और नचाता है, फिर संतों के सतसंग की क्या महिमा कही जावे कि कैसा ही जीव नापाक और मैला होवे, उसको मेहर दृष्टि से बचन सुना कर और अपने संग लगा कर साफ़ और पाक कर लेते हैं। और यह बात कुछ अचरजी नहीं है, क्योंकि जहाँ खूंख़्वार और ज़हरीले और तरह २ के जानवर सिखाये जा सकते हैं, तो फिर मुनष्यों की गढ़त और सफ़ाई कुछ मुशकिल बात नहीं है।।

१२ - इस वास्ते हर एक जीव को जो अपना फ़ायदा संसारी और परमार्थी चाहे, लाज़िम और मुनासिब है कि जिस तरह बन सके, संतों के सतसंग में शामिल होवे और जब २ मौक़ा मिले, सतसंग में हाज़िर होकर और तवज्जह के साथ बचन सुन कर अपनी गढ़त और दुरुस्ती करावे।।

बचन सत्रहवाँ

यह मन मस्त और ग़ाफ़िल है और दुनिया के भोग बिलास में बँधा हुआ है। बिना सतसंग और पूरे गुरू की मेहर के इसकी हालत बदल नहीं सकती। इस वास्ते अपने

वक़्त के पूरे गुरू का सतसंग प्रीति के साथ करना चाहिये और जहाँ तक मुमकिन होवे, उनका बचन मानना चाहिये, तब कारज बनेगा।।

१ - यह मन मस्त और ग़ाफ़िल और जगत में भरमा हुआ है और माया के पदार्थों में इसकी रुचि बहुत ज़्यादा है, सो दसों इन्द्रियों के संग हमेशा भोगों में फँसा और अटका रहता है या उन्हीं का चिन्तवन करता है।।

२ - परमार्थ में ऐसा मन कुछ काम नहीं दे सकता है, लेकिन जो सतगुरु के सतसंग में मौज से इसका गुज़र हो जावे और वे इस पर मेहर की नज़र फ़रमावें, तो अलबत्ता बदल कर संसारी से परमार्थी बन सकता है।।

३ - कुल्ल जीवों का मन संसारी है, क्योंकि शुरू से उनको संसारी लोगों का संग होता रहा है और संसार ही की महिमा उनके चित्त में बसी रहती है।।

४ - जो जीव मेहर से संत सतगुरु के सतसंग में जावे और बचन चित्त दे कर सुने और समझे, तो उसके मन में कुल मालिक राधास्वामी दयाल का खोज पैदा होगा और दया से दिन २ हर एक बात का निर्णय सुन कर और समझ कर उसकी समझ बूझ बढ़ती जावेगी और दुनिया और उसके सामान में पकड़ हलकी होती जावेगी और परमार्थ और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और प्रेमी जन के संग की क़दर और दुर्लभता चित्त में समाती जावेगी।।

५ - यह मन जन्मान जनम से अपने निज घर को भूला हुआ और संसार में फँसा हुआ चला आता है सो इसकी प्रीति कुटम्ब परिवार धन माल और भोग बिलास में निहायत गहरी और मज़बूत हो रही है। यह प्रीति यकायक तोड़ी या छोड़ी नहीं जा सकती, लेकिन सतसंग में बैठ कर आहिस्ते २ इस प्रीति की जड़ कटनी मुमकिन है।।

६ - जब जीव को संतों के बचन सुन कर या पढ़ कर, उनके ज़्यादा सुनने और समझने और उनके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करने का शौक़ पैदा हुआ, तब से राधास्वामी दयाल आप उसको सतसंग में शामिल करके बचन सुनवावेंगे और उसकी समझ बूझ उन बचनों के मुवाफ़िक़ बदलेंगे और उसके हिरदे में दिन २ बचन और अभ्यास का थोड़ा बहुत रस और आनन्द बख़्श कर तरक़्क़ी देते जावेंगे और अंतर और बाहर दया और रक्षा के परचे देकर, चरनों में उसकी प्रीति और प्रतीत बढ़ाते जावेंगे।।

७ - यह हाल उत्तम अधिकारी जीव का है और मध्यम और निकृष्ट अधिकारी खोज करते हुये या महिमा सुन कर संतों के सतसंग में हाज़िर होते हैं और कोई दिन सतसंग करके संत सतगुरु और उनके बचनों की महिमा उनको समझ में आती है और फिर चरनों में और संगत में भाव बढ़ता जाता है और उपदेश लेकर और अभ्यास शौक़ के साथ करके कुछ रस अंतर में मिलता है और उनके प्रेम और प्रतीत को बढ़ाता है।।

८ - इस तरह हर एक क़िस्म के जीव सतसंग में शामिल होकर कैफ़ियत अंतर में देख सकते हैं और अपना परमार्थी भाग दरजे-ब-दरजे बढ़वा सक्ते हैं, क्योंकि सतसंग में कैसा ही जीव आवे, उस पर एक दिन ज़रूर दया होगी, यानी रास्ता उसके उद्धार का जारी हो जावेगा।।

९ - सतसंग मुवाफ़िक़ गहरे दरिया के है। चाहे कैसा ही मैला और नापाक जीव उसमें आकर बैठे, वह ज़रूर धुल कर एक दिन साफ़ हो जावेगा।।

१० - सतसंग के बाहर कोई कहीं जावे, वह वहाँ दिन २ ज़्यादा मैला होता जावेगा, क्योंकि सब जगह काल और कर्म और मन और माया और पाँच दूत और दसों इन्द्रियों का भारी ज़ोर है कि जिसको कोई नहीं रोक सकता और जिसके मारे तमाम जीव मन और माया के हुक्म में चल रहे हैं और दुनिया की आबादी और रौनक़ और मज़बूती बढ़ा रहे हैं।।

११ - इस वास्ते संत बारम्बार फ़रमाते हैं कि बाहर से सतगुरु का सतसंग और अंतर में सुरत शब्द जोग का अभ्यास जिस क़दर बन सके, बराबर करे जाओ, तो दो तीन या चार जनम में पूरा काम बन जावेगा यानी धुर धाम में बासा मिल जावेगा और जनम मरन और कष्ट और क्लेश से क़तई छुटकारा हो जावेगा।।

* * * * * *

बचन अठारहवाँ

सतगुरु को दीनता पसंद है, सो जो कोई सच्चा दीन होकर उनकी सरन लेवे, उसी को पार पहुँचाते हैं।।

१ - कुल मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु को दीनता पसंद है। जिसके हिरदे में अपने जीव के कल्याण और उद्धार के वास्ते सच्ची दीनता यानी ग़रज़मंदी है, वही सच्चे मन से राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु को सर्व समर्थ समझ कर उनकी सरन लेगा और फिर उसी के जीव का कारज संत सतगुरु अपनी मेहर और दया से आप बनावेंगे।

२ - जीव अपना नफ़ा नुकसान अच्छी तरह नहीं पहिचान सकता और न भक्ति की करतूत देख कर, इसको ठीक २ विचार आ सकता है।।

३ - इस वास्ते जीव के नफ़े की कुल कार्रवाई संत सतगुरु की मेहर और दया पर मौक़ूफ़ है। जिस तरह वे मुनासिब जानें, जीव को मन और माया के पंजे से छुड़ा कर निज घर में पहुँचाते हैं।।

४ - जीवों पर इस क़दर फ़र्ज़ है कि संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होकर बचन चेत कर सुनें और जो कि मानने के वास्ते सुनाये गये हैं, उनको जिस क़दर बन सके आहिस्ते २ मानना शुरू करें और चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाते जावें, तब वे जीव सतगुरु के मंज़ूर नज़र और प्यारे होते जावेंगे और उसी क़दर उन पर दया होती जावेगी।।

५ - दया का ज़हूरा और निशान यह है कि सच्चे परमार्थी के मन में नया प्रेम जागता जावे और संत सतगुरु और प्रेमी जन की सेवा की नई नई उमंगें उठें। कोई दिन ऐसी हालत रहेगी और जब किसी क़दर बासना या इरादा इसका पूरा हो जावेगा, फिर कोई पकड़ मज़बूत बाहरमुख कार्रवाई में, नहीं रहेगी और न किसी दूसरे को देख कर या उनके कहने से किसी क़िस्म की आम बाहरी कार्रवाई में, गहरी तवज्जह के साथ बर्ताव करेगा। सिर्फ़ संत सतगुरु के चरन मज़बूती से पकड़ कर अपनी भक्ति और प्रेम बढ़ावेगा और अंतरमुख कार्रवाई में तरक़्क़ी करेगा और सतगुरु की भक्ति ख़ास तौर से, और भी प्रेमी जन की सेवा निहायत मुहब्बत के साथ, जारी रक्खेगा।।

६ - दुनिया में भी हर एक को चाहे मनुष्य होवे या हैवान, दीनता और सेवा प्यारी है। बड़े ख़ूँख़्वार और ज़हरीले जानवरों को सीधा करके, मुनष्य उनसे तरह २ के काम और सेवा लेते हैं और खेल खिलाते हैं।।

७ - जब कि कुल जानदारों को दीनता और सेवा पसंद है, तो फिर मालिक को और भी संत सतगुरु और प्रेमी जन को भी यही दीनता और सेवा पसंद है। इस वास्ते जो कोई अपने जीव का कल्यान और निज धाम में पहुँचना चाहें, उनको चाहिये कि तलाश करके संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होकर उपदेश लेवें और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में आरती और प्रार्थना करते रहें और प्रेम और दीनता के साथ अंतर और बाहर सेवा करके अपना

भाग जगाते रहें, तब सहज में जीव का कारज उम्दा तौर से बन जावेगा।।

८ - बाज़े मानी और अहंकारी और रोज़गारी लोग हाकिमों और धन वालों की, बहुत ख़ुशी और दीनता के साथ सेवा करते हैं, लेकिन संत सतगुरु से अहंकार रखते हैं और उनका दर्शन तक नहीं करते, बल्कि उनकी और उनके प्रेमी जन की झूठी सच्ची बुराई और निन्दा करके, जीवों को उनके सन्मुख जाने और सतसंग में शामिल होने से रोकते हैं। यह जीव ज़ाहिर में बड़े और आम जीवों के पूज्य नज़र आते हैं, मगर अंदरूना उनका बिलकुल स्याह है और आख़िर में उसी कार्रवाई के मुवाफ़िक़ चौरासी में भरमेंगे और जब तक कि संत सतगुरु से मिल कर अंतर अभ्यास और उनके चरनों में भक्ति नहीं करेंगे, तब तक किसी सूरत में इनके जीव का उद्धार नहीं होगा यानी अपने निज घर में जो राधास्वामी धाम है, कोई जनत करके बासा नहीं पावेंगे और जो जीव इन लोगों का संग करेंगे, वह भी चौरासी में भरमेंगे और अपने जीव के उद्धार से महरूम रहेंगे।।

बचन उन्नीसवाँ

गुरु-स्वरूप मालिक की महिमा, हरि-स्वरूप से ज़्यादा है, क्योंकि यह स्वरूप उद्धार कर्त्ता, है और दूसरा यानी हरि-स्वरूप संसार में फँसाने वाला है।।

१ - जब कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल अति दया करके, जीवों के उद्धार और उपकार के वास्ते इस लोक में संत सतगुरु रूप धारन करते हैं, तो उस स्वरूप और उस समय की महिमा और उन जीवों की बड़ भागता जो उनके चरनों में लगे हैं, किसकी ताक़त है कि वर्णन कर सके या लिख सके ?

२ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल का निज स्वरूप, पिंड और ब्रह्माण्ड और माया की हद्द के परे और पहिले दरजे की चोटी पर है। जैसा कि वह स्वरूप है, कहने में नहीं आ सकता और जैसा कि वह देश है, वह भी वर्णन किया नहीं जा सकता। किसी को इस देश और इस स्वरूप की ख़बर तक भी नहीं और किसकी ऐसी ताक़त कि इतनी दूर चल कर और चढ़ कर उसको लख सके ?

३ - फिर अब उस निहायत दरजे की दया का जिसके सबब से इस आदि और अनादि और अकह और अपार स्वरूप ने उतर कर नर देह में क़याम किया और सतगुरु रूप धारन करके जीवों का उद्धार जारी फ़रमाया, किसकी ताक़त है कि ज़रा सा भी हाल वर्णन कर सके और शुकराना उस मेहर और दया का अदा कर सके ? आश्चर्य ही आश्चर्य है, इस दया का कुछ वार पार नहीं है।।

४ - जिस स्वरूप का दर्शन महा दुर्लभ और महा कठिन बल्कि ना-मुमकिन था, उस स्वरूप को नर स्वरूप में मौजूद हर कोई देख सकता है और थोड़ी दीनता और सेवा कर के, उस स्वरूप की दया बहुत आसानी के साथ ले सकता है।।

५ - हज़ारों बल्कि बे-शुमार लोग मेहनतें कर कर और पच २ और थक २ हार कर मर गये पर राधास्वामी दयाल के धाम की ख़बर तक न मिली, लेकिन किस क़दर बड़ा भाग उन जीवों का है कि जिनको इस समय में राधास्वामी दयाल के दर्शन, बिना चाह और इरादे के, सहज में और मुफ़्त हासिल हुये।।

६ - और किस क़दर कम-नसीबी उन जीवों की है कि जो बा-वजूद हर तरह से मौक़ा मिलने के फिर भी राधास्वामी दयाल के दर्शनों और सतसंग से महरूम रहे और बजाय महिमा और गुणानुवाद गाने के, झूठी सच्ची बातें खड़ी करके उनकी निन्दा करते रहे।।

७ - जिस किसी ने कि इस स्वरूप की कुछ भी महिमा जानी, उसका काम बनना शुरू हो गया और जिसने ग़ायब स्वरूप मालिक की पूजा या सेवा या याद करके अपने तईं तृप्त माना, उसने निपट धोखा खाया और हर तरह से ख़ाली रहा। क्योंकि ख़ुद कुल मालिक का बचन और हुकम है कि जो कोई पूरे गुरू की मार्फ़त मुझ से मिलेगा, उसको मैं दर्शन दूँगा और सब तरह से उसकी ख़बर लूँगा, लेकिन जिनके मन में ग़ायब स्वरूप की टेक है और गुरू स्वरूप की महिमा नहीं समाती है, वह हरगिज़ मेरे महल में दख़ल नहीं पावेंगे क्योंकि चढ़ाई से पेश्तर हर तरह से मन और सुरत की गढ़त और सफ़ाई ज़रूरी है और वह सिवाय सतगुरु के और कोई नहीं कर सकता। इस सबब से कोई जीव बिना सतगुरु की दया के, तीन लोक के पार, नहीं जा सकते।।

८ - जिन लोगों को सतगुरु का संग प्राप्त हुआ और वे चेत कर बचन सुनते हैं और प्रेम सहित दर्शन करते हैं, उनके मन और सुरत की हालत बहुत जल्द बदलनी शुरू होवेगी यानी संसारी अंग निकसते और परमार्थी स्वभाव धसते हुये नज़र आवेंगे और दुनिया और उसके सामान की पकड़ ढीली और संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की प्रीति और प्रतीत और सरन मज़बूत होती चली जावेगी।।

९ - जिस किसी ने संत सतगुरू की थोड़ी बहुत महिमा जानी और कुछ पहिचान की है, तो वह विकारी कामों में बर्तने से आहिस्ते २ हट जावेगा और सकारी कामों में प्रवेश करता जावेगा, तब कोई अर्से में जब सफ़ाई कामिल हो जावेगी, वह शख़्स संत सतगुरु का प्यारा हो जावेगा, तो फिर उनकी मेहर और दया से सहज में जगत से न्यारा हो जावेगा।।

१० - और जो ग़ायब स्वरूप का ध्यान करता है, वह स्वरूप उसको कभी नज़र नहीं आवेगा और न उसके दिल के ऊपर ध्यान का काफ़ी असर पैदा होगा कि जिस से भय और भाव कुल मालिक और सतगुरु का उसके दिल में समावे और जब कि सच्चा भय और भाव नहीं, तब मन और सुरत की गढ़त किस तरह होवे?

११ - और निज स्वरूप के नज़र न आने और ध्यान का असर न पैदा होने की वजह यह है कि यह लोग निगुरे होते हैं यानी किताबें पढ़ कर विद्या और बुद्धि की मदद से, हर एक बात का अनुमान करते हैं।।

१२ - इन जीवों से सच्चे और पूरे गुरू के सामने दीनता नहीं करी जा सकती और न अहंकार करके ध्यान की जुगत दरियाफ़्त करते हैं। इस वास्ते अनुमानी स्वरूप और अनुमानी ध्यान में अटके रहते हैं और अख़ीर में ख़ाली हाथ जाते हैं।।

१३ - अब संत सतगुरु फ़रमाते हैं कि कुल जीवों को लाज़िम और मुनासिब है कि जहाँ कहीं सच्चे और पूरे गुरू की संगत मौजूद होवे, उसमें जाकर ज़रूर शामिल होवें और जो भाग से पूरे गुरू का दर्शन मिल जावे, तो उनकी सेवा तन मन धन से जिस क़दर बन सके, प्रेम सहित करें और अपने तईं महा बड़भागी समझें कि यह दुर्लभ और अनमोल दर्शन और संग उनको मुफ़्त में और सहज में प्राप्त हुआ। इस दर्शन की क़दर जानना यही है कि जिस क़दर बन सके, उनका सतसंग और भक्ति करें और अपना निज परमार्थी भाग जगवावें।।

१४ - जिस किसी ने गुरू स्वरूप की महिमा नहीं जानी, वह जीव महा अभागी रहे और बारम्बार चौरासी में भरमेंगे। बाज़े नादान ख़्याल करते हैं कि गुरू स्वरूप तो नाशमान है और हाड़ माँस चाम का बना हुआ है तो जब यह ठहराऊ नहीं है तो इसके ध्यान से क्या फ़ायदा होगा। जवाब इसका यह है कि हरचंद देह स्वरूप नाशमान है। पर उसका आकार स्वरूप चैतन्य मंडल में हमेशा क़ायम रह सकता है और जिस क़दर ऊँचे चढ़ाया जावे, उसी क़दर सूक्ष्म होता चला जाता है। इस वास्ते जो लोग कि अंतर में ध्यान करते हैं, वह इस आकार स्वरूप का तसव्वुर करते हैं और उसको

बराबर संग रखते हैं। वह स्वरूप कभी नहीं नाश होता या बदलता है और एक दिन निज स्वरूप से मिला कर छोड़ेगा। यह भेद लोगों को मालूम नहीं है, इस सबब से मन मत ध्यान करते हैं।।

१५ - कुल मालिक का निज स्वरूप निराकार और रूप रंग रेखा से ख़ाली और न्यारा है, पर यह स्वरूप सब स्वरूपों के, जहाँ तक कि रूप रंग और रेखा है, परे है, इस वास्ते जब तक कि रास्ते में कुल स्वरूपों से, जो कि उस अरूप ने आदि धार के उतार के वक़्त दरजे-ब-दरजे धारन किये हैं, न मिलेगा, तब तक निज स्वरूप का दर्शन किसी सूरत में हासिल नहीं हो सकता।।

१६ - इस वास्ते जो जीव कि मुताबिक़ राधास्वामी मत के उपदेश लेकर अंतर और बाहर भक्ति भाव में बरतेंगे, वही एक दिन सत्तलोक में पहुँच कर सत्त पुरुष का दर्शन पावेंगे और फिर राधास्वामी दयाल के निज स्वरूप का जो कि रूप रंग और रेखा से न्यारा है, दर्शन पाकर परम आनन्द को प्राप्त होंगे।।

१७ - अब ख़्याल करो कि जब तक कि बाहर से सतगुरु से मिल कर, भेद भाव रास्ते का और तरीक़ा चलने का मालूम नहीं होगा और सतगुरु आप दया करके मेहर और मदद नहीं फ़रमावेंगे, तब तक अंतर के स्वरूप और फिर निज स्वरूप से हरगिज़ मेला नहीं होगा और न रास्ता तै हो सकेगा।।

१८ - इस वास्ते जीव के सच्चे उद्धार के मुआमले में गुरु स्वरूप मालिक की महिमा और मौजूदगी निहायत ज़रूरी है। बग़ैर उनकी दया और मदद के कुछ काम

नहीं बन सकता यानी न तो भेद भाव और तरीक़ा अभ्यास का मालूम हो सकता है और न सच्चे मालिक और संत सतगुरु की प्रीति और प्रतीत हिरदे में पैदा हो सकती है और न बढ़ सकती है और न मेहर और दया के परचे अंतर और बाहर मिल सकते हैं कि जिन से विश्वास चरनों में बढ़े और नई २ उमंग जागे। फिर सुरत और मन का सिमटाव और चढ़ाई किस तरह होवे?

१९ - जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, उन सब में थोड़ी बहुत कार्रवाई बाहरमुखी है और अंतरमुख कार्रवाई का ज़िक्र बहुत कम है और जो कहीं कहीं इस क़िस्म की कार्रवाई जारी भी है, तो नीचे के मुक़ामात में, और चढ़ाई बहुत कम है। इस सबब से बहुत कम जीव ब्रह्माण्ड में पहुँचते हैं और माया के घेर के पार कोई भी नहीं जा सकता।।

२० - इस वास्ते गुरु स्वरूप की महिमा हर तरह से और हर हालत और हर समय में ज़बर है और हरि स्वरूप नाम ब्रह्म का है, उसकी महिमा गुरु स्वरूप के मुक़ाबले में कम है। क्योंकि उसने जीव को ब्रह्मा विष्णु महादेव और शक्ति के हवाले करके संसार में पैदा किया और माया के भोग और पदार्थों में बाँधा सो अनेक तरह के दुख और क्लेश दुनिया में जीव सहते हैं और जनम मरन के चक्कर में पड़े हैं और अपने २ कर्मों का फल भोगते हैं, कोई उनका सच्चा हितकारी और छुड़ाने वाला नहीं मिलता, इस सबब से हमेशा दुख सुख भोगते हैं और माया के घेर में से निकल नहीं सकते।।

२१ - गुरु स्वरूप की महिमा यह है कि ऐसे फँसे हुये जीवों को दया करके निकालते हैं यानी बचन सुना कर और उपदेश देकर और अभ्यास करा कर जीव का स्थान बदलते चले जाते हैं यानी पिंड देश से ब्रह्माण्ड में और ब्रह्माण्ड से चढ़ा कर राधास्वामी देश में पहुँचाते हैं कि जहाँ काल और कर्म और कष्ट और कलेश और जनम मरन बिल्कुल नहीं है और वहाँ पहुँच करके जीव अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर अमर आनन्द को प्राप्त होता है।।

बचन बीसवाँ

जब तक कि जड़ चैतन्य की गाँठ न खुलेगी, तब तक मन विकारी अंगों में थोड़ा बहुत बर्तता रहेगा और जब कि अन्तर अभ्यास करके गाँठ खुल गई, तब कोई विकार निकट नहीं आवेगा।।

१ - जिस मुक़ाम पर कि सुरत यानी निर्मल चैतन्य मन और माया के साथ मिल कर नीचे को उतरा, वहीं जड़ और चैतन्य की आपस में गाँठ बँध गई और यह मुक़ाम त्रिकुटी का है।।

२ - नीचे उतर कर हर मुक़ाम पर नई मिलौनी होती गई और नई गाँठ भी लगती गई।।

३ - अब नेत्र के स्थान पर जहाँ कि जाग्रत अवस्था में सुरत की बैठक है, इस क़दर गहरी मिलौनी, सुरत

चैतन्य की, साथ मन और माया और पाँच दूत और दस इन्द्रियों के, होगई है कि इन सब का इस स्थान पर भारी ज़ोर और शोर है और जीव की ताक़त नहीं कि वह इनको अपने बल से हटा सके।।

४ - इस वास्ते सब जीव लाचार होकर मन और माया की धारों और तरंगों में बह रहे हैं। और दिन दिन बहते चले जाते हैं।।

५ - जब कभी परमार्थी बचन सुनने का इत्तिफ़ाक़ होता है, तो उस वक़्त जीव को भूल और ग़फ़लत जो कसरत से संसार में फैल रही है और निबलता मन और इन्द्रियों की, वास्ते रोकने या हटाने धारों के, नज़र आती है।।

६ - बाज़े जीव जो अक्सर दुनिया के हाल को मुलाहिज़ा करते रहते हैं और अपने मन इन्द्रियों पर भी, दुरुस्ती से चलने के वास्ते, किसी क़दर ज़ोर देते हैं, वे संतों के संतसंग में आकर निहायत ख़ुश होते हैं और वहाँ सब सामान सच्चे मालिक की परख पहिचान और जीव के सच्चे उद्धार का तैयार देख कर निहायत उमंग और दीनता के साथ, संत सतगुरु के चरनों में प्रीति और प्रतीत करते हैं और दिन दिन सतसंग और सेवा और अभ्यास करके अपने भाग को बढ़ाते हैं।।

७ - संत सतगुरु की महिमा कौन वर्णन कर सके है कि जो दया दृष्टि करें तो अनेक जीवों को चाहे जैसे होवें खींच कर चरनों में लगा लेवें और विरह और प्रेम अंग की थोड़ी बहुत बख़्शायश करके उन जीवों का कारज बनाते चले जावें।।

८ - जो जड़ चैतन्य की गाँठ सुरत के उतार के वक़्त अन्तर में लग गई है, वह बग़ैर संत सतगुरु की कृपा के नहीं खुल सकती। क्योंकि जब वे अपनी मेहर और दया से मन और सुरत को समेट कर अन्तर में चढ़ावेंगे, उस वक़्त मन और माया की धारें ख़ुद-ब-ख़ुद सुरत चैतन्य की धार से, आहिस्ते २ न्यारी होती जावेंगी और बजाय सुरत चैतन्य को दबा लेने के, अब उसकी धार के आसरे अंतर में चलेंगी और जहाँ तक उनकी हद है, अंतर में उलटेंगी।।

९ - जितने विकारी अंग कि इन धारों के एक जगह जमा होने से या कुछ इनके सिमटाव होने से पैदा हुए थे, अब इन धारों के मुतफ़र्रिक़ होने से कमज़ोर बल्कि दूर हो जावेंगे और जो कि सकारी अंग सतसंग और अभ्यास करके पैदा हुए हैं, वे जीव को उसकी सफ़ाई और प्रीति और प्रतीत के बढ़ाने में मदद देते हैं और दिन २ बढ़ते जाते हैं।।

१० - इस बात की जाँच हर कोई जो सच्चे परमार्थ का गाहक है, चंद रोज़ संत सतगुरु का सतसंग करके अपने अंतर और बाहर कर सकता है कि किस क़दर सहूलियत और आसानी और जल्दी के साथ सच्चे परमार्थी के मन और सुरत और इन्द्रियों की गढ़त और दुरुस्ती और सफ़ाई होती है और किस क़दर दया के साथ प्रेम की बख़शायश करके, परमार्थी की सुरत का सूत कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में लगाया जाता है।।

११ - यह सब महिमा संत सतगुरु की है। जो कोई सच्चा उद्धार चाहे, उसको मुनासिब है कि उनका या

उन की संगत का खोज करके, जिस क़दर जल्द मुमकिन होवे, उसमें शामिल होकर, अपना परमार्थी भाग जगावे और भेद भाव समझ कर और अभ्यास की जुगत लेकर कमाई शुरू करे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में और भी संत सतगुरु के जो उनका दर्शन भाग से मिल जावे, प्रीति और प्रतीत करे और दिन दिन बढ़ाता जावे और फिर दया को अंतर और बाहर निरखता जावे कि किस क़दर उसकी सम्हाल होती है।।

१२ - ख़ुलासा यह है कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु, जो जीव कि सच्चे मन से उन की सरन में आया और जो कार्रवाई कि उन्होंने बताई है, वह सचौटी के साथ जिस क़दर बन सके करने लगा, तब वे ज़रूर उसके जीव का कारज जिस तरह मुनासिब होगा, सब तरह से दुरुस्त बनावेंगे और एक दिन निज घर में पहुँचा कर बासा देवेंगे कि जहाँ काल का कष्ट और क्लेश और मन और माया का भरम और धोखे की रचना नहीं है।।

* * * * * *

E Edition Ver 1.0